शाश्वत ऊर्जा

इरेडा IREDA

एक बार इरेडा सदैव इरेडा

अक्षय क्रांति

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA

एक बार इरेडा सदैव इरेडा

अक्षय क्रांति

"पर्यावरण विशेषांक"

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

श्रीमती माला घोष चौधुरी

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)

सहसंपादक

श्री आलर कुल्लू , उप प्रबंधक (राजभाषा)

सुश्री तुलसी, वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेख रचिता श्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश	-	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा	04
2.	पर्यावरण और हम	लेख	स्वेता गुप्ता	05
3.	चेतना का विकास	लेख	संगीता श्रीवास्तव	06
4.	पर्यावरण में तापमान वृद्धि :हमारे भविष्य के लिये एक चेतावनी	लेख	ललित कुमार सिंह	08
5.	इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए संपूर्ण जहां में अक्षय ऊर्जा से देश को खुशहाल बनाएंगे	कविता	हरीश कुमार चावला	10
6.	पर्यावरण सुरक्षा	कविता	गुंजन महानी	13
7.	पर्यावरण संरक्षण और नवीनीकरण: समृद्धि की दिशा में एक प्राथमिकता	लेख	पीयूष अग्रवाल	14
8.	इमली का पेड़	लेख	आलर कुल्लू	15
9.	सतत विकास के लिए जी-20 (G-20) और जलवायु न्याय	लेख	रिजवान अथर	17
10.	यमुना नदी	लेख	हजारी लाल	21
11.	वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ,	कविता	तुलसी	23
12.	देश एवम् सेना को समर्पित लाल बहादुर शास्त्री जी पर कविता ।	कविता	गायत्री चावला	24
13.	पर्यावरण संरक्षण	कविता	जपजी घुम्मन	26
14.	पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो ही सुरक्षित रहेंगे हम...	लेख	डॉ. गौतम कुमार मीणा	27
15.	पृथ्वी का स्वास्थय बचना हैं, हमीं को हमीं से	लेख	डॉ. हीरा मीणा	30
16.	पिता	कविता	राजेश अग्रवाल	33
17.	पर्यावरण सुरक्षा	लेख	मनोज पुनिया	35
18.	नया सवेरा	लेख	मीतू माथुर बधवार	36
19.	लालच भली बला	लेख	पूनम सुभाष	40
20.	दंगा और प्रवासी मजदूर	कविता	प्रतीक साव	42

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा

संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

हम गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा के कार्यान्वयन के बारे में समय-समय पर दिए गए दिशा-निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इरेडा सदैव से प्रयत्नशील हैं । यह हर्ष का विषय है कि इरेडा में सरकारी काम-काज हिंदी में किए जाने की दिशा में सतत रूप से प्रगति हो रही है और इसकी सराहना मंत्रालय, राजभाषा विभाग नराकास के द्वारा भी की गई है । इस वर्ष इरेडा का दिनांक 17.02.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा सफलतापूर्वक निरीक्षण किया गया जो इरेडा के हिंदी ग्रुप एवं सभी अधिकारियों की राजभाषा के प्रति कटिबद्धता को दर्शाता है ।

इरेडा की 'ई-पत्रिका' कई वर्षों से प्रकाशित की जा रही है जिसमें विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक-आर्थिक और राष्ट्रीय आयामों का समावेश कर हर अंक को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है । इस बार यह 'पर्यावरण विशेषांक' के रूप में प्रस्तुत है । इरेडा में हिंदी कार्यान्वयन और अनुपालन से संबंधित गतिविधियों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है । इन गतिविधियों से कार्यालय में हिंदीमय वातावरण का निर्माण होता है और कर्मियों की हिंदी के प्रति अभिरूचि जागृत होती है । ई-पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सभी इरेडा कर्मियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस पत्रिका को पढ़कर लाभान्वित हों और इसके आगामी अंक को और अधिक रोचक बनाने के लिए अपने-अपने लेखों/रचनाओं का योगदान अवश्य दें । राजभाषा की गतिविधियों और इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन, राजभाषा के प्रति अपने अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के सक्रिय सहभागिता का परिणाम है ।

मुझे विश्वास है इरेडा की 'ई-पत्रिका' 'अक्षय क्रांति' जहां एक ओर कार्मिकों को रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहन देती है वहीं दूसरी ओर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती है ।

'अक्षय क्रांति' पत्रिका हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें.....

पर्यावरण और हम

स्वेता गुप्ता
प्रमुख प्रबंधक (तकनीकी सेवा)
इरेडा

प्रकृति के पंचतत्व, जीव, जन्तु, पेड, पौधों और मनुष्यों से पर्यावरण बनता है। रोचक बात यह है कि जिस अनुपात मे पंचतत्व प्रकृति मे मौजूद है, उसी अनुपात मे यह हमारे शरीर में भी मौजूद है। यही कारण है कि पर्यावरण से हमारा गहरा तालुक है, जिससे हम विस्मृत हो गए हैं। हमारे विचारों और हमारे कर्मों का सीधा-सीधा असर पंचतत्व के माध्यम द्वारा पर्यावरण पर पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों ने ये शोध से सिद्ध भी किया है। एक बर्तन में रखे जल को हम क्रोध, ईर्ष्या व दुख की दृष्टि देकर उसका बर्फ जमाएँ, तो उसमे विकृत आकृति बनती है। परंतु शांत, खुश व स्नेह भरी आत्मिक दृष्टि जल को देकर उसका बर्फ जमाए तो सुंदर आकृति बनती है। इससे यह सिद्ध होता है की हम अपने मनसा, वाचा और कर्मणा द्वारा पर्यावरण को कितना प्रभावित करते हैं।

हमारे संकल्प शुद्ध हो या अशुद्ध हो, इसका संचार आकाश तत्व/ पंचतत्व द्वारा होता है। हम किसी के प्रति कोई संकल्प लेते हैं, वो आकाश तत्व के माध्यम से उन तक पहुँच जाता है। ये तो सबने, कभी न कभी अनुभव किया ही होगा। हमारी आत्मिक स्तिथि पर्यावरण पर बहुत असर डालती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारा पर्यावरण के साथ रिश्ता बद-से-बदतर हो रहा है। प्रकृतिक आपदाएँ इस बिगड़ते रिश्ते का परिणाम है। जरा विचार करें, ऐसा क्यूँ हो रहा है? ये गहराई से समझने की बात है कि हमारा स्वयं के साथ जैसा रिश्ता होता है, उसी प्रकार का रिश्ता अन्यों तथा पर्यावरण के साथ भी होता है। आज जरूरत है कि हम अंतरमुखता होकर , स्वयं को समझें और अपने मनसा-वाचा-कर्मणा को सतोप्रधान बनाएं ताकि प्रकृति सुखदाई हो।

स्वस्थ व रोगमुक्त जीवन के लिए, स्वच्छ पर्यावरण बहुत महत्वपूर्ण है। सभी प्राणियों मे मनुष्य ही बुद्धिजीवी है, तो जाहिर है की पर्यावरण की सुरक्षा करना हमारा ही दायित्व बनता है। मुख्य बात यह है की दो तरीकों से पर्यावरण के प्रति कार्य करना होगा -

1) पहले तो सूक्षम रूप से कार्य करना होगा जिससे स्वयं के साथ रिस्ते, मधुर, स्नेही और आत्मिक बने। तभी प्रकृति के साथ हमारा लेनदेन स्नेहमइ होगा, उसके साथ रिस्ते ऐसे बनेंगे कि वो हमें सुख देगी।
2) पर्यावरण की बाहरी स्वछता और रख-रखाव भी जरूरी है। इसके लिए, हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाने होंगे और प्रदूषण को नियंत्रित करने के हर उपाय पर ज़ोर देना होगा जैसे की अक्षय ऊर्ज से बिजली बनाना, कारखानों से कार्बन/जहरीली गैस का उत्सर्जन वा जल प्रदूषण को नियंत्रित करना इत्यादि।

तो आइए हम सब पर्यावरण के साथ अपने रिस्ते बेहतर बनाए और इसे स्वच्छ बनाएं।

****

चेतना का विकास

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)
इरेडा

चेतना के विकास की तीसरी घनत्वता (Density) से पाँचवी घनत्वता प्रक्रिया में यदि आप महसूस कर रहे है, इस बदलाव को, कि आप में भी पहले से कुछ बदलाव हो रहे है, और अपने चारों ओर प्रकृति में भी कुछ तो विशेष बदल रहा है, तो यह आपके लिए है । आपका पुराना व्यक्तित्व बदल रहा है पर नया व्यक्तित्व अभी पूरी तरह से पैदा नहीं हुआ है । अनेक भविष्यवाणियों को जो बहुत प्राचीन समय में की गई थी । बाइबिल, भविष्य मालिका जैसी अनेक भविष्यवाणियों को भी आपने सुना होगा तो वह इस खास समय की बात करते हैं कि ऐसा समय आएगा जब चेतना का तेजी से विकास होगा और जिसे 'जागृति' ग्रेट अवेकनिंग जैसे विषयों से बताया जा रहा है । जब लोग पूर्ण रूप से सही-सही जानना चाहते है कि आखिर यह है क्या और कोई भी, कैसे जाने खुद से, कि क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं । सत्य युग, स्वर्ण युग, परिवर्तन की दिशा में धरती और वायुमंडल के साथ-साथ मानवता भी अब परमसत्ता, प्रकृति और स्वयं के सामंजस्य की ओर जागरूक हो रही है । इस परिवर्तन के दौर में सबसे मुख्य है ये जानना कि ब्रहांड की सबसे सुंदर शक्ति है प्रेम और करूणा जिसकी शक्ति से सृजनात्मक शक्ति पैदा होती है जिससे मनुष्य जिन्हें सिद्धियाँ समझता है उनकी क्षमताओं को जागृत कर सकता है । ईश्वर के समस्त गुण और समस्त शक्तियाँ मनुष्य में होने के कारण वह यदि अंतर्मुखी होकर जाग्रत होता है तो वह धीरे-धीरे इन शक्तियों से परिचित हो रहा है । इसीलिए वह विशिष्ट मानवीय अनुभव हमें सीखा रहे हैं कि हमारे जीवन का उद्देश्य है । हम यूँही जीवन को व्यर्थ नहीं कर सकते हैं । शांति, प्रेम, निस्वार्थ सेवा, सकारात्मक सोच रखने वाले लोगों को एकजुट होकर इस सुंदर भविष्य की स्थापना करने में सहयोग करते हुए अपनी चेतना का विकास करना है । उच्च स्तरीय चेतना में अपनी चेतना को पहुँचाना है इस प्रक्रिया में हो रहे अनुभव ही इस मार्ग की सीढ़ी के रूप में परत दर परत खुल रहे हैं और स्वयं ही महसूस हो रहा है कि एक नवीन व्यक्तित्व अथवा नवीन अनुभव हो रहे हैं । इन

अनुभवों के बारे में तथा कौन-कौन से लक्षण है जिनसे हम जान सकते है कि हम उच्च स्तरीय चेतना में जा रहे हैं । जो भी परम शांति, प्रेम और सौहार्द की इस दुनिया में जाएंगे तथा जो जानते है कि आध्यात्मिक तरीके से जीवन जीने की कला को खोज रहे सभी वो मनुष्य जो नकलीपन से परेशान होकर सच्ची दुनिया में रहने के अनुभव लेना चाहते हैं । जो यह जानते है कि पृथ्वी एक जीवित विकास है और इस के विकास में अपना सहयोग देने की प्रबल इच्छा रखते हैं । धरती और उसकी तत्वों की शक्तियों को अपनी शक्ति बनाते हुए इस महान कार्य में जुड़ना होगा पीड़ित समाज, पीड़ित लोगों की पुकार धरती माँ को दुखी करती है । धरती अब दृढ़ निश्चय कर चुकी है कि वो अपनी सभी शक्तियों, वायु, जल, अग्नि के साथ शुद्धिकरण की ओर जाएगी जो अब शुद्ध और चैतन्य आत्माएं है वे इसे पहचान कर अनुभव कर रही है ओर सहयोग करने के उद्देश्य से जागृत हो रही है । क्या आप को कभी ऐसा महसूस हुआ है या हो रहा है ?

****

पर्यावरण में तापमान वृद्धि :हमारे भविष्य के लिये एक चेतावनी

ललित कुमार सिंह
प्रबंधक
इरेडा

महाभारत में एक कथा का वर्णन है , वनवास के दौरान एक बार थके हुए पांडव एक झील को पार कर रहे थे और उससे पानी पीना चाहते थे। हालांकि, तभी अचानक यक्ष देवता प्रकट होते हैं और कहते है कि वे केवल तभी पानी पी सकते हैं जब उनके पास उनके प्रश्न का उत्तर हो। हालांकि, पांडव भाइयों में युधिष्ठिर को छोड़कर बाकी सभी यक्ष की बात को अनसुना कर,पानी पी लिया और बेहोश हो गये। यह देखकर आख़िरी में जब युधिष्ठिर ने यक्ष की बात मानी और जब यक्ष ने यह प्रश्न किया, "मनुष्य सबसे मूर्खतापूर्ण काम क्या करता है," युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, कि मनुष्य जो सबसे मूर्खतापूर्ण काम यह करता है कि अपने आस-पास हर किसी को मरते हुए देखने के बाद भी, वह भूल जाता है कि वह भी एक दिन वह भी मृत्यु को प्राप्त होएगा और अपने इस तरह से जीवन को व्यर्थ गवा देता है"।

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की रिपोर्ट को देखने के बाद अब मानव भी यही गलती कर रहा हैं, जिसमें कहा गया है कि दुनिया 2030 के दशक की शुरुआत तक 1.5 डिग्री सेल्सियस (2.7 डिग्री फ़रेनहाइट) जलवायु तापमान को पार करने की संभावना है। रिपोर्ट में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि हमारे पास केवल सात साल से भी कम समय है जब हमारे देखते देखते पृथ्वी 1.5 डिग्री वार्मिंग तापमान को पार कर जाएगी । यह हमारे जीवनकाल में पहली बार होगा जब हम अचानक आई बाढ़ और लंबे सूखे सहित असामयिक प्राकृतिक आपदाओं को देखेंगे जो हमारी पिछली पीढ़ियों में कभी नहीं हुआ है। सबसे महत्वपूर्ण खोज रिर्पोट में से एक यह है कि पृथ्वी के 1.5 डिग्री तापमान को पार करने के बाद, जलवायु आपदाएं इतनी चरम हो जाएंगी कि लोग अनुकूलन करने में सक्षम नहीं होंगे। रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से चेतावनी दी गई है कि मानव गतिविधियों ने पहले से ही इस ग्रह को एक उग्र् गति पर ला खड़ा कर दिया है जो रिकॉर्ड किए गए इतिहास में कभी नहीं हुआ है, जिससे समुदायों और पारिस्थितिक तंत्र को अपरिवर्तनीय नुकसान हुआ है। इस रिपोर्ट के प्रस्तुत होने के बाद, विभिन्न देशों, विशेष रूप से विकसित देशों की प्रतिक्रिया ऐसी है जैसे वे किसी सपने में जी रहे हों। इन देशों ने इस रिर्पोट को आधिक तवज्ज़ो नहीं दी और यहां तक कह दिया कि ऐसी कोई चीज नहीं होने वाली है और यह बस एक बड़ा वैज्ञानिक षड्यंत्र है और अफसोस की बात है, उनके उत्सर्जन अभी भी बढ़ रहे हैं, और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के वर्तमान प्रयास ग्लोबल वार्मिंग तबाही को रोकने के लिए अपर्याप्त हैं। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे समृद्ध और विकसित देशों से 2040 तक कार्बन उत्सर्जन को समाप्त करने का आह्वान किया है, जो दुनिया के बाकी हिस्सों के लक्ष्यपूर्ति की तुलना से दस साल पहले है ।

वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री की वृद्धि के साथ, हम एक ऐसे मोड़ पर हैं जहां न केवल हमारे पारिस्थितिक तंत्र खतरे में हैं, बल्कि पृथ्वी पर कोई भी जगह अब सुरक्षित नहीं है। आज लोग इसे अपनी आँखों से देख रहे हैं, यहां तक कि अपने देशों में भी, हालांकि दस साल पहले वे केवल वैश्विक तापमान की बातों पर हँसते थे। हमारा देश भारत में भी , अचानक बाढ़ अधिक तीव्र हो गई है, और हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्य असामयिक बादल फटने के परिणामस्वरूप सबसे अधिक पीड़ित हैं। यहां तक कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भी इस साल कई इलाकों में बाढ़ आई और यमुना खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। इस प्रकार, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप जैसे अन्य देशों में जंगलो में आग देखी जा रही है और यहां तक कि इस साल अलास्का में भी तापमान पहली बार 5.5 डिग्री को पार कर गया जिसके परिणामस्वरूप वहां के जंगलों में आग लग गई।

सन् 2018 में, आईपीसीसी ने पाया था कि 1.5 C सेल्सियस पर यह दुनिया पूर्व-औद्योगिक युग की तुलना में 2 डिग्री C (3.6F) गर्म होने की तुलना में काफी सुरक्षित होगी। इस पर वैज्ञानिकों ने भविष्यवाणी की थी कि 1.5 डिग्री सैल्सियस की सीमा के अंदर रहने की और 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक वार्मिंग से बचने के लिए, मानवता को क्रमशः 2050 और 2070 तक कार्बन उत्सर्जन को पूरी तरह से खत्म करने की आवश्यकता होगी। अति दुःख पूर्वक शब्दों में हमें यह मानना पड़ रहा है कि मानवता पांच साल बाद भी किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के करीब नहीं पहुंची है। संश्लेषण अध्ययन के अनुसार, सदी के अंत तक वैश्विक औसत तापमान 3.2 डिग्री सेल्सियस (5.8 डिग्री फ़ारेनहाइट) तक बढ़ सकता है जब तक कि सारे देश नए पर्यावरण कानूनों को नहीं अपनाते हैं और पहले से मौजूद पर्यावरण कानूनों को लागू नहीं करते हैं तब उस परिदृश्य में, आज पैदा हुआ एक बच्चा अपने जीवनकाल में सैकड़ों प्रजातियों के नुकसान, समुद्र के स्तर में कई फीट की वृद्धि और लाखों लोगों के उनके क्षेत्रों से दूर जाने की भयावह स्तिथि का गवाह बनेगा ।

हालांकि, रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि सरकारी अधिकारियों, व्यावसायिक अधिकारियों और निवेशकों जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों ने अक्सर इन चेतावनियों की अवहेलना की है। 1990 के बाद से, जब आईपीसीसी ने अनियंत्रित वार्मिंग के संभावित घातक प्रभावों पर अपना प्रारंभिक शोध जारी किया, तब से कुल कार्बन उत्सर्जन 40% से अधिक हुआ है। सरकारें अभी भी जीवाश्म ईंधन के उपयोग का समर्थन करती हैं, और व्यवसाय और बैंक जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की तुलना में प्रदूषणकारी उद्योगों में निवेश करने पर बहुत अधिक जोर देते हैं। अध्ययन के अनुसार, शीर्ष 10% कमाई करने वालों का उपभोग पैटर्न नीचे के 50% की तुलना में तीन गुना अधिक प्रदूषण पैदा करता है।

हालांकि सब कुछ निराशा और कयामत का संकेत नहीं है, रिपोर्ट यह भी कहती है कि सौर और पवन जैसे नवीकरणीय स्रोतों से बिजली अब जीवाश्म ईंधन से बिजली की तुलना में सस्ती है। विकासशील देशों को नवीकरणीय ऊर्जा बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद करने में उपयोगी साबित होगी और इसके अपनाने से कार्बन उत्सर्जन को रोका जा सकेगा तथा कार्बन उत्सर्जित ऊर्जा की मांग को कम किया जा सकेगा जो दुनिया भर में 700 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित करती है।
अंत में हमें यह अच्छी तरह से समझना होगा कि इस पूरे ब्रह्मांड में, जीवन केवल इस नीले ग्रह पर ही है जिसे हम पृथ्वी और अपना घर कहते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, हमारा यह घर संकट में है, और जब तक कार्बन उत्सर्जन पर तेजी से अंकुश नहीं लगाया जाता है, हम 1.5 डिग्री वार्मिंग के लिए निकास को तेजी से पार कर लेंगे, जिसमें वापिस सामान्य जीवन के विकास की तरफ़ मुड़ने की बहुत कम संभावना है।

****

इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए संपूर्ण जहां में
अक्षय ऊर्जा से देश को खुशहाल बनाएंगे

हरीश कुमार चावला
प्रबंधक
इरेडा

इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए संपूर्ण जहां में
अक्षय ऊर्जा से देश को और खुशहाल बनाएंगे

नारा एक बार इरेडा सदैव इरेडा
हम इसको सिद्ध करते जायेंगे

इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए संपूर्ण जहां में
अक्षय ऊर्जा से देश को और खुशहाल बनाएंगे

आज बरसों की मेहनत से देखा है सौर ऊर्जा का कमाल
सूर्य जो हमेशा से शास्वत है और रहेगा हमेशा बेमिसाल

इस ऊर्जा शक्ति की जब हमने की पहचान
बनने लगे नवीकरणीय क्षेत्र में नये कीर्तिमान

सौर ऊर्जा उपयोग से गैर-अक्षय ऊर्जा के साधनो को हटाया
सूर्य जैसे निरंतरता रख के ऊर्जा के क्षेत्रो में बड़ा मुकाम बनाया

तु ना रुकेगा कभी तु न थकेगा कभी
कर शपथ कर शपथ कर शपथ
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ

इसी अग्नि की ज्वाला को बड़ा उपयोगी बनाया
आज घर घर की छतो पर सौर ऊर्जा को बैठाया

खपत कम हुई कोयले यूरेनियम ईंधन की, कमी आई है प्रदुषण में भी
जो न हितकर है मानव के लिए बल्कि घबराया बेजुबान जानवर भी

सौर ऊर्जा के महत्व को जानकर हमने चाँद पे भी चंद्रयान पहुंचाया
शिव शक्ति पॉइंट नाम रखकर देश का परचम विश्व में लहराया

देखा है हमने पवन के उस विशाल वेग को
धाराशाही कर देता है पल में बड़े महल को

इस पवन का वेग समझ में आया
तो पवन ऊर्जा का नया युग पाया

अब भाई बहनों की तरह हाइब्रिड पवन - सौलर खेल खेल रहे हैं
कुदरत के निराले खेल में फ्लोटिंग सोलर भी सागर में मेल रहे है

जल की शक्ति की तो बात ही निराली है
हाइड्रो पावर कलकल करती ऊर्जा मतवाली है

गाँधीजी के पदचिन्हो पर एक कदम स्वच्छता की और बढ़ाया
स्वच्छ भारत अभियान का पाठ घर - घर में सभी को पढ़ाया

स्वच्छता मिशन से घर-घर से उठा कूड़ा है
विज्ञान इसमें भी बहुत बारीकी से जुड़ा है

वेस्ट से एनर्जी बनाकर बड़ा योगदान निभाया
किसानों के लिए खाद बनाकर सबल बनाया

बायोमास को-जेनेरशन किसान के गन्ने को लुभाया
गंगा-जमुना जैसा पवित्र संगम सा उत्पाद बनाया
संगम ये ऊर्जा देता ही है साथ में एथेनॉल भी बनाया

नए सफर में बिजली वाहनों की धूम है
कम तेल आयात की चारो और बूम है

मीठा सा अहसास है और आने वाले समय से आस है
जरुरत न होगी महंगे हो रहे पेट्रोल की यही विश्वास है

इस से आवागमन का खर्चा बहुत ही कम होगा
सस्ते परिवहन से महंगाई का भी खत्म दम होगा

वंचितों को भी मंजिल जल्दी बुलाएगी
इन चहरो पर भी मुस्कान लौटाएगी

अब समय और भी सुहाना होगा
जब ग्रीन हाइड्रोजन का बहाना होगा

अक्षय ऊर्जा की सबसे बड़ी क्रांति सिद्ध होगी
बची कमी ग्रीन हाइड्रोजन से प्रज्वलित होगी

हवाई जहाज और पानी के जहाज भी चहकने लंगेगे
स्टील सीमेंट कारखाने हाइड्रोजन से जब चलने लंगेगे

फिर सही मायनों में रिन्यूएबल एनर्जी से बढ़ेंगे
मिलकर अक्षय ऊर्जा की जय - जयकार गढ़ेंगे

नवीकरणीय ऊर्जा से एक मुकम्मल जहां बनाएंगे
प्रदूषण दूर करके प्राकृतिक संसाधनों को बचाएंगे

कोयले - यूरेनियम को सहजकर देश को सुपर पावर बनाएंगे
इंसान जानवर परिंदो को स्वच्छ हवा का आनंद करवाएंगे
चारों ओर खुशहाली फैलाकर भारत को और भी महान बनाएंगे

हर गांव हर घर को रोशन है करना
अक्षय ऊर्जा से पूरा होना है सपना

बुद्ध महावीर की धरा पर अशोक का शांति का सन्देश फेलायेंगे
अक्षय ऊर्जा की रोशनी से उस मुकाम को फिर से साकार बनाएंगे

कंधार अफगान चीन और ताईवान अक्षय ऊर्जा से सबको साथ लाएंगे
सोने की चिड़िया देश को बनाकर विश्व में फिर से विश्व गुरु कहलायेंगे

इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए संपूर्ण जहां में
अक्षय ऊर्जा से देश को और आगे बढ़ाएंगे

इरेड़ा का ध्येय पाने के लिए अक्षय ऊर्जा से
देश को और भी महान और खुशहाल बनाएंगे

****

पर्यावरण सुरक्षा

गुंजन महानी
उप प्रबंधक (वित्त तथा लेखा)
इरेडा

पर्यावरण से है ही जीवन, इसे अपना दोस्त बनाते है,
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं। चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं।।
देती हैं सांसें जीवन को, आओ जानें इन पेड़ों की माया,
करती हैं शुद्ध हवाओं को, हमें देती है फल, फूल और छाया।।
आज के दौर में बहुत जरुरत है इस प्रकृति के प्रति प्रेम बढ़ाने की,
तो आओ मिल कर प्रकृति के लिए प्रेम बढ़ाते हैं और मिलकर पेड़ लगातें है।
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं।।
सागर, बदल और गगन प्रदूषित, नदी, धरा और पवन, प्रदूषित।
बढ़ गया है प्रदूषण इतना कि, सांस लेना है अब मुश्किल।।
मिल कर अब इस प्रकृति को मनाते हैं, आओ मिल कर पेड़ लगाते है।।
कट गए हैं वृक्ष, सुख गया नदिओं का पानी।
डेह रही है धरती, मचल रहा है सागर, पूछ रही है हमसे मिलके ये सभी वादियां,
क्या हमने इंसान का बिगाड़ा है, करो हमे फिर से हरा-भरा,
जैसा ईश्वर ने हमको बनाया है।
आओ सुनें इन सबकी पुकार, एक बार फिर कर के दिखाते हैं
हम भी परोपकार, चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं। चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं।।
अपने आने वाली पीड़ी का भविष्य सवारतें हैं, चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं।
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं ।।

****

पर्यावरण संरक्षण और नवीनीकरण: समृद्धि की दिशा में एक प्राथमिकता

पीयूष अग्रवाल
उप प्रबन्धक (वित्त एवं लेखा विभाग)
इरेडा

पर्यावरण संरक्षण आजकल एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है जो हमारे समाज और विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बढ़ती आबादी, विनियमित उपयोग और असमय में जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों की खतरे में पड़ रही है। इस परिस्थिति में, नवाचारी और नवाचार के उपायों की खोज करने की आवश्यकता है जो हमें सुरक्षित और स्वास्थ्यपूर्ण भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करें।

वर्तमान में, ऊर्जा के स्रोतों में बदलाव और सुधार हमारे संवासीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जैव ऊर्जा एक ऐसा विकल्प है जो पर्यावरण को हानि नहीं पहुंचाते हुए हमें ऊर्जा की आपूर्ति में मदद कर सकता है। यह स्रोत विशेष रूप से जल, खाद्य, सूचना और जैव उपादानों का सही तरीके से उपयोग करने पर आधारित है। बायोगैस, बायोडीजल, गोबर गैस आदि जैसे उत्पाद जैव ऊर्जा के उच्च संभावनाओं के उदाहरण हैं जो विभिन्न उद्योगों में उपयोगी हो सकते हैं।

नवाचारी ऊर्जा स्रोतों का अधिक प्रयोग करके हम स्थिरता और सुरक्षितता की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, जल ऊर्जा आदि जैसे स्रोतों का प्रयोग करके हम भविष्य में ऊर्जा सुरक्षा को बनाए रख सकते हैं। यह न केवल पर्यावरण की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आर्थिक विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। नवाचारी ऊर्जा स्रोतों पर निवेश करके हम नौकरियों की सृजनात्मकता, वित्तीय स्थिरता और तकनीकी उन्नति को बढ़ावा दे सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण में एक और महत्वपूर्ण कदम है प्रदूषण की रोकथाम। वनस्पति, जलवायु, और वनस्पतियों के प्राकृतिक पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए हमें नकरात्मक प्रभावों को न्यूनतम करने के उपाय अपनाने चाहिए। वाहनों का प्रदूषण, उद्योगों से निर्गत होने वाले वायुमंडलीय गैसों का अपशिष्ट, और अपर्याप्त जलस्रोतों का उपयोग प्रदूषण के मुख्य कारण हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए परिवहन क्षेत्र में नवाचारी उपायों की खोज करना भी महत्वपूर्ण है। इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रयोग करके हम वाहनों के प्रदूषण को कम कर सकते हैं और वायुमंडलीय गैसों का निर्गतिकरण कर सकते हैं। साथ ही, सार्वजनिक परिवहन के प्रदूषण को कम करने के लिए मेट्रो और बस जैसे साधनों का प्रयोग करना भी महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण और नवीनीकरण हमारे समाज की सर्वोत्तम स्थिति की दिशा में एक प्राथमिकता होनी चाहिए। नवाचारी ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग करके हम पर्यावरण की सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं। प्रदूषण की रोकथाम और नवाचारी परिवहन संसाधनों का प्रयोग करके हम अपने प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

इस प्रकार, हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें और नवाचारी उपायों का प्रयोग करके हम अपने आने वाले समय को सुरक्षित और स्वास्थ्यपूर्ण बना सकते हैं।

****

इमली का पेड़

आलर कुल्लू
उप प्रबंधक (राजभाषा)

छोटानागपुर की राजधानी रांची से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर सिमडेगा जिला से पश्चिम-उत्तर दिशा के दूर –दराज स्थान में बसा मेरा ग्राम केशलपुर । मेरे गाँव के एक ओर ऊंचे-नीचे पहाड़ों और भू भागों से घिरा हुआ और दूसरी ओर उत्तर से दक्षिण की ओर बहती शंख नदी की किनारा से सीमांकान करते हुए ऊंचा-नीचा भू खंड, ऊँचे-ऊँचे बूढ़े पहाड़,घोंटी पहाड़, भंवार पहाड़ और पहाड़ों कि शृंखला में स्थित रामरेखा धाम, छोटी-छोटी पहाड़ी,नाला, टुकू-टाड़ा,उबड़-खाबड़, टेढ़े-मेढ़े आड़ों से बना खेत -दोन तलाब आदि है । केशलपुर नाम पड़ने के पीछे भी एक, कहानी है हमारे बुजुर्गों का कहना है कि यह क्षेत्र घनघोर बिहाड़ जंगलों से घिरा हुआ करता था और इस जंगलों और वन पतरा छोटे –छोटे झाड़ियों के बीच एक बड़ा और ऊँचा सा केशल का वृक्ष था जिसे स्थानीय बोली में कहा ढ़वटा जाता है, जिसके कारण यह केशलपुर पड़ा । हमारे घर के आँगन में हमारे दादाजी के एक इमली एक बीज बोया था वह बड़ा होकर एक विशाल वृक्ष बन गया है और हमारे तीनों पीढ़ियों को एक छत्र -छाया में समेटे हुआ है । इस इमली के पेड़ की उम्र लगभग 100 हो गई है और हम इसी पेड़ की छाया में गुली-डंडा खेले, गर्मी के दिनों में इसकी शीतल छाया में खाट और चारपाई लगाकर दिन को विश्राम करते है । यह पेड़ जितना वृद्ध होता जा रहा है ,उतना ही और अधिक फल लग रहा है । सचमुच में यह इमली का वृक्ष हमारे कुल्लू परिवार के विकास की गाथा सुना रहा है । यह भारत में पाया जाने वाला एक मुख्य वृक्ष है। इमली का पेड़ भारत में हर जगह पाया जाता है। इमली का पेड़ बहुत विशाल रहता है। इमली के बारे में सभी लोग जानते हैं, क्योंकि इमली का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में होता है। इमली से बहुत सारे खाने वाले वस्तुएं बनाई जाती है। इमली का प्रयोग खाने को खट्टा करने के लिए किया जाता है। इमली की चटनी सभी लोगों ने खाई होगी, क्योंकि इमली की चटनी समोसे के साथ बहुत पसंद की जाती है। इमली की चटनी खट्टी मीठी लगती है। इमली का उपयोग गोलगप्पे में भी किया जाता है। इमली का इस्तेमाल हमारे डेली लाइफ में होता है। इसलिए इमली को सभी लोग जानते हैं। इमली के फल और पत्तों के औषधीय गुण होते हैं । इमली में विटामिन ए, विटामिन सी, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नीज, फाइबर पाया जाता है। इमली के पेड़ के फूल, पत्तियां, फल और फल के अंदर के बीज का प्रयोग खाद्य सामान बनाने में किया जाता है। इमली के बहुत सारे आयुर्वेदिक फायदे भी हैं। इमली का प्रयोग कई बीमारी के रोकथाम में किया जाता है। इमली में एंटीबैक्टीरियल गुण पाया जाता है। दक्षिण ही नहीं किंतु पूरे भारत में इमली का प्रयोग प्रतिदिन उपयोग किया जाता है।

अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेकर मैं अपने फार्म में कई फलदार पेड़ आम,लीची ,केला अमरूद,आनार आदि का बागवानी किया हूं । इसके हरे -भरे पेड़- पौधों को देखकर मन -मयूर खुशी से नाचता है ,फलों का राजा आम के कुछ पेड़ों पर फल लग रहे हैं ,पेड़ से तोड़ कर आम खाने का मजा किसको नहीं होगा ? इससे पर्यवारण हारा -भरा होता है ,शुद्ध आक्सीजन मिलता है । मेरा तो एक ही नारा है -खूब पेड़ -पौधे लगाओ ,साग -भाजी उगाओ और इसका आनंद लो ,पर्यावरण को हारा-भरा बनाओ ,लंबी उम्र के साथ स्वास्थ्य जीवन जीओ और हरित ऊर्जा अपनाओ और धरती को आनेवाले पीढ़ी के लिए भी बचाओ ,मेरे भारत वासियों !

“ पृथ्वी को हरा- भरा बनाओ,शुद्ध ऑक्सीज़न लो ,हरित ऊर्जा अपनाओ और जीवन को खुशहाल बनाओ”

****

सतत विकास के लिए जी-20 (G-20) और जलवायु न्याय

रिजवान अथर
सहायक प्रबन्धक
इरेडा

जी-20 या **ग्रुप ऑफ ट्वेंटी** (जिसमें 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं) बहुत महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय मंच है। इसके सदस्य देश वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 80% से अधिक, वैश्विक व्यापार का लगभग तीन-चौथाई और वैश्विक जनसंख्या का दो-तिहाई हिस्सा हैं। जी-20 मंच पर हस्ताक्षरित समझौते लगभग पूरी दुनिया को आकार दे सकते हैं। अत: एक बड़ी संख्या में विश्व के देश सम्मिलित हैं । यह महत्वपूर्ण है कि भारत ने इस वर्ष जी-20 की प्रेसिडेंसी स्वीकार की है जो जल्वायु संकट का समाधान खोजने में जुटा हुआ है । हालाँकि, यह प्रेसिडेंसी, भारत को कोई विधायी या न्यायिक शक्ति नहीं देता है, लेकिन यह हमारे देश के लिए बहुत गर्व की बात है। हम, भारतीय नागरिक प्रतिष्ठित महसूस करते हैं कि हमें यह अवसर प्राप्त हुआ है ।

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित, इरेडा, (Indian Renewable Energy Development Agency), (IREDA), जो एक भारत सरकार का प्रतिष्ठान है, जी-20 प्रेसीडेंसी के कार्य में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमारे नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम.एन.आर.ई.) (MNRE) को यह महत्वपूर्ण कार्य दिया गया है ।

2030 तक 500 गीगावाट (GW) के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय ने 2023-24 से 2027-28 तक अगले पांच वर्षों के लिए सालाना न्यूनतम 50 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता की बोली लगाने का फैसला किया है।

जी-20 देशों की सूची :-

Argentina अर्जेन्टीना	**Japan जापान**
Australia ऑस्ट्रेलिया	**Mexico मेक्सिको**
Brazil ब्राज़ील	**Republic of Korea कोरिया**
Canada कनाडा	**Russia रुशिया**
China चीन	**Saudi Arabia सऊदी अरेबिया**
France फ़्रांस	**South Africa साउथ अफ्रीका**
Germany जर्मनी	**Turkiye तुरकेय**
India भारत	**United Kingdom यूनाइटेड किंगडम**
Indonesia इंडोनेशिया	**United States of America (USA) संयुक्त राष्ट्र अम्रीका**
Italy इटली	**European Union यूरोपियन यूनियन**

अतिथि देश (Guest Countries) :

1) Bangladesh बांग्लादेश
2) Egypt मिस्र
3) Mauritius मॉरीशस
4) Netherlands नीदरलैंड्स
5) Nigeria नाइजीरिया
6) Oman उमान
7) Singapore सिंगापुर
8) Spain स्पेन
9) United Arab Emirates संयुक्त अरब इमारात

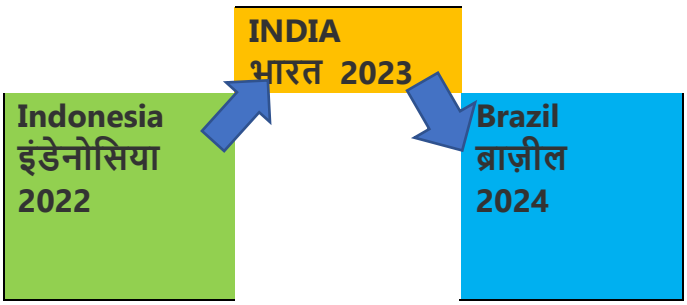

G-20 प्रेसीडेंसी (Presidency)

भारत के लिए G-20 बहुत अहम है क्योंकि दुनिया का कार्बन बजट लगभग खत्म हो चुका है. विकसित देश अपने हिस्से से अधिक का उपयोग करते रहते हैं। जलवायु क्षेत्र में भारत का नेतृत्व वैश्विक प्रभाव के साथ समाधान पेश कर सकता है। G-20 का भारत का नेतृत्व 500 GW के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

हर कोई जानता है कि दुनिया पहले से ही असाधारण कार्रवाई के बिना 1.1 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर है, आने वाले दशकों में ही 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को पार करने की संभावना है। हमारे देश भारत की जलवायु और विकास के दोहरे उद्देश्य G-20 की अध्यक्षता का मार्ग प्रशस्त करेंगे। हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने यह महान पहल की है और अब G-20 हमारे लिए बहुत गर्व का क्षण है। यह वास्तव में विश्व में हमारे देश का नाम रोशन कर रहा है। अब, इस G20 अध्यक्षता के कारण भारत ने वैश्विक नेता के रूप में प्रवेश किया है। जलवायु सेना (Climate Corpus) की टीम के लिए प्रशंसा है जो शून्य उत्सर्जन लक्ष्य हासिल करने और जलवायु संकट के खिलाफ लड़ाई लड़ने में जुटी हुई है।

यह 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड परिदृश्य, आज के विकसित देश 1850-2019 के बीच उत्सर्जन के बड़े पैमाने पर जिम्मेदार हैं, भारत ने वैश्विक संचयी ग्रीनहाउस गैस (जी°एच°जी°) (GHG) उत्सर्जन में केवल 4% का योगदान दिया है ।

हरित ऊर्जा, खुली पहुंच :

Green & Open Access :

केंद्रीय ऊर्जा एवं नई और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह ने 13 मई, 2023 को नई दिल्ली में हरित ऊर्जा मुक्त पहुंच नियमों पर उद्योग और अन्य हितधारकों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। बैठक हाइब्रिड (Hybrid) मोड में आयोजित की गई थी। बैठक में 500 से अधिक प्रतिभागियों ने वस्तुतः भाग लिया और लगभग 50 शारीरिक रूप से उपस्थित थे। प्रतिभागियों ने ग्रीन ओपन एक्सेस नियमों के संबंध में उनके

सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं को उठाया । केंद्रीय ऊर्जा एवं नई और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री ने उद्योग को हरित ऊर्जा ओपन एक्सेस नियमों को अपनाने में हर संभव मदद का आश्वासन दिया ।

इस अवसर पर बोलते हुए, माननीय मंत्री, श्री सिंह ने उद्योग के नेताओं से हरित होने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने और उचित दरों पर हरित ऊर्जा प्राप्त करने के लिए "हरित ऊर्जा ओपन एक्सेस" नियमों के प्रावधानों का लाभ उठाने पर जोर दिया । टिकाऊ पर्यावरण बीबीबीबीबी - "ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस नियम, 2022 भारत के हरित होने और 2030 के लिए भारत के अद्यतन एन°डी°सी° लक्ष्य के अनुरूप उत्सर्जन में 45% की कटौती की दिशा में एक बड़ा कदम है। 500 GW का (लक्ष्य) बिजली की लागत को काफी कम करने में भी मदद करेगा।

श्री सिंह ने उद्योग के हितधारकों से ऐसे मामलों की सरकार को सूचित करने के लिए भी कहा, जहां ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस नियमों का ठीक तरह से पालन नहीं किया जा रहा है, ताकि सरकार संबंधित एजेंसियों के साथ इस मुद्दे को उठा सके और यदि आवश्यक हो, तो दंडात्मक कार्रवाई की जा सके। उद्योग द्वारा हरित ऊर्जा ओपन एक्सेस नियमों को अपनाने के लिए आवश्यक नियामक, नीति, आदि के समाधान सहित उद्योग को हर संभव मदद का आश्वासन दिया गया ।

<u>ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस नियमों की मुख्य विशेषताएं :-</u>

इन नियमों को ऊर्जा का उत्पादन, खरीद और खपत को बढ़ावा देने के लिए अधिसूचित किया गया है ।

1) किसी भी उपभोक्ता को ग्रीन ओपन एक्सेस की अनुमति है और ग्रीन एनर्जी के लिए ओपन एक्सेस लेन-देन की सीमा को 1 मेगावाट से घटाकर 100 kW कर दिया गया है, ताकि छोटे उपभोक्ता भी ओपन एक्सेस के जरिए अक्षय ऊर्जा खरीद सकें।
2) उपभोक्ता डिस्कॉम से हरित ऊर्जा की आपूर्ति की मांग करने के हकदार हैं। डिस्कॉम पात्र उपभोक्ताओं को हरित ऊर्जा की खरीद और आपूर्ति करने के लिए बाध्य होंगे।
3) इन नियमों ने ओपन एक्सेस देने के लिए समग्र अनुमोदन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है। आवेदन में एकरूपता और पारदर्शिता लाकर समयबद्ध प्रक्रिया के साथ-साथ एक राष्ट्रीय पोर्टल के माध्यम से ओपन एक्सेस की मंजूरी अनिवार्य कर दी गई है। ग्रीन ओपन एक्सेस के लिए स्वीकृति 15 दिनों में दी जानी है अन्यथा इसे "प्रदान किया गया" माना जाएगा।
4) वितरण लाइसेंसधारियों के क्षेत्र में सभी बाध्य संस्थाओं पर एक समान "नवीकरणीय खरीद दायित्व" (RPO) होगा। इस आर.पी.ओ. की पूर्ति के लिए ग्रीन हाइड्रोजन/ग्रीन अमोनिया को भी शामिल किया गया है।
5) उपभोक्ताओं को हरित ऊर्जा का उपभोग करने पर "ग्रीन सर्टिफिकेट" दिया जाएगा और सुविधा भी दी जाएगी।

विद्युत अधिनियम 2003 के अनुसार, टैरिफ (tariff) उपयुक्त आयोग द्वारा निर्धारित किया जाता है। तदनुसार, हरित ऊर्जा के लिए टैरिफ उपयुक्त आयोग द्वारा निर्धारित किया जाएगा

विद्युत मंत्रालय ने पहले ही "ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड" (जी.सी.आई.एल) को केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में अधिसूचित कर दिया है, जो ग्रीन ओपन एक्सेस रजिस्ट्री (जीओएआर) पोर्टल (https://greenopenaccess.in) का संचालन करती है, जो पंजीकरण और आवेदन करने के लिए सिंगल विंडो पोर्टल है। ग्रीन एनर्जी ओपन एक्सेस (GEOA), वेब आधारित GOAR पोर्टल के माध्यम से संबंधित प्रतिभागियों को अनुमोदन, अस्वीकृति, संशोधन आदि से संबंधित सभी जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

अतः यह निष्कर्ष निकला है कि हमारा भारत देश अपारंपरिक ऊर्जा कि दिशा में बहुत तेज़ी से अग्रसर है । और वह दिन दूर नहीं है कि जब भारत दुनिया के नक्शे पर अपनी एक पहचान बना लेगा। जी-20 का मंच एक हमारे लिए बहुमूल्य वरदान है ।

जलवायु न्याय की बात की जाय तो मैं ये कहना चाहूँगा की हम सब मिलकर पर्यावरण की रक्षा करें एवं, जितना संभव हो सके, अपारंपरिक ऊर्जा का ही उपयोग करें। अपने घरों मे सोलर पैनल लगवाएँ । हमारा यही कदम जलवायु न्याय होगा । वेरना इसके परिणाम घातक हो सकते हैं ।

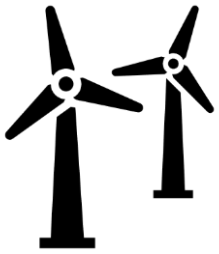

यमुना नदी

(हजारी लाल)
प्रोटोकॉल अधिकारी

यमुना का उद्गम स्थान हिमालय है। ऊँचाई 6200 मीटर से 7 से 8 मील उत्तर-पश्चिम में स्थित कालिंद पर्वत है, जिसके नाम पर यमुना को कालिंदी कहा जाता है। इसकी धारा यमुनोत्तरी पर्वत (20,731 फीट ऊँचाई) से प्रकट होती है। यमुनोत्तरी पर्वत से निकलकर पहाड़ी दरों और घाटियों में प्रवाहित होती है तथा वदियर, कमलाद, वदरी अस्लौर जैसी छोटी और बड़ी पहाड़ी नदियों को समेटती हुई आगे बढ़ती है। यह हिमालय छोड़ कर दून की घाटी में प्रवेश करती है। वर्तमान सहारनपुर जिला के फैजाबाद ग्राम के समीप मैदान में आती है। ऊँचाई समुद्र सतह से लगभग 1276 फीट रह जाती है।

पौराणिक स्रोत

भगवान श्री कृष्ण ब्रज संस्कृति के जनक कहे जाते हैं अतः ब्रज में इसे *यमुना मैया* कहते हैं। गर्ग संहिता में यमुना के पचांग में पाँच नामों का वर्णन है –

प्रवाह क्षेत्र

पश्चिमी हिमालय से निकल कर उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा फिर यह दिल्ली, आगरा से होती हुई प्रयागराज में गंगा नदी में मिल जाती है। दिल्ली के निकट नदी में, यह अधिकतम गहराई 68 फीट (50 मीटर) है। आगरा में, यह गहराई 3 फुट (1 मीटर) तक हैं।

प्राचीन प्रवाह

ऐतिहासिक काल में यमुना मधुबन के समीप बहती थी, शत्रुध्न जी ने सर्वप्रथम मथुरा नगरी की स्थापना की थी। सत्रहवीं शताबदी में भारत आने वाले यूरोपीय विद्वान टेवर्नियर ने कटरा के समीप की भूमि को देख कर यह अनुमान लगा लिया था कि वहाँ किसी समय यमुना की धारा थी। प्राचीन वृन्दावन में यमुना गोवर्धन के निकट प्रवाहित होती थी। वर्तमान में वह गोवर्धन से लगभग 4 मील दूर हो गई है।

आधुनिक प्रवाह

वर्तमान समय में सहारनपुर जिले के फैजाबाद गाँव के निकट आने पर यह आगे 65 मील तक बढ़ती हुई हरियाणा के अंबाला और करनाल जिलों को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर और मुजफ्फरनगर जिलों से अलग करती है।

तटवर्ती स्थान

यमुना नदी का प्रथम प्रवेश बुलंदशहर जिला की खुर्जा तहसील के 'जेबर' नामक कस्बा के निकट होता है।वर्तमान में यमुना की एक ही धारा है और उसी के तट पर वृन्दावन बसा हुआ है। मथुरा यमुना के तट पर बसा हुआ एक ऐसा ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान है आगरा में यमुना तट पर जो इमारतें है, मुगल बादशाहों द्वारा निर्मित किला और ताज महल पर्यटकों के निमित्त अत्याधिक प्रसिद्ध हैं।

इटावा से आगे मध्य प्रदेश की प्रसिद्ध नदी चम्बल यमुना में आकर मिलती है, यमुना नदी, गंगा (गङ्गा) नदी के समानान्तर बहती है। अन्त में प्रयाग में जाकर वे दोनों संगम बनाकर मिश्रित हो जाती हैं। यमुना नदी की कुल लम्बाई उद्गम से लेकर प्रयाग संगम तक लगभग 860 मील है।

सांस्कृतिक महत्त्व

भारतवर्ष की सर्वाधिक पवित्र और प्राचीन नदियों में यमुना की गणना गंगा के साथ की जाती है। ब्रजमंडल की तो यमुना एक मात्र महत्वपूर्ण नदी है। दीर्ध कालीन परम्परा की प्रेरक और यहाँ की धार्मिक भावना का प्रमुख आधार रही है।

कवियों ने गिरिराज गोवर्धन की भाँति यमुना के प्रति भी अतिशय श्रद्धा व्यक्त की है। उनका यमुना स्तुति संबंधी साहित्य ब्रजभाषा भक्ति काव्य का एक उल्लेखनीय अंग है।

****

वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ,

तुलसी
वरिष्ठ निजी सचिव (हिंदी)
इरेडा

वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ,
ये संदेश फैलाना है।
पर्यावरण को शुद्ध बना के,
जीवन को स्वस्थ बनाना है।
मत काटो पेड़ों को तुम,
इस पर किसी का बसेरा हैं।
इसके दम पर सांसे चलती,
नित आता नया सबेरा हैं।
नयी पीढ़ी से ये अनुरोध,
सब मिलकर वृक्ष लगाओ।
पेड़ों की रक्षा तुम करके,
पर्यावरण सुरक्षा में हाथ बढाओं।
चारों तरफ हरियाली हों,
हर घर में खुशहाली हों।
सुन्दर सा एक दृश्य बनाएं,
हर घर आँगन वृक्ष लगाएँ ।
आओ पर्यावरण बचाने का,
मिलकर हम संकल्प उठाऐ

****

देश एवम् सेना को समर्पित
लाल बहादुर शास्त्री पर कविता ।

गायत्री चावला
पुत्री श्री हरीश चावला

देश के वो लाल थे, बहादुर साहसी वो बाल थे।
शास्त्रों में थी निपुणता जिनकी, दुश्मनों के काल थे ।।
दुश्मन भी उसके नाम से काँपे ऐसा राष्ट्रभक्त न्यारा था ।
घर में घुसकर ही दुश्मनों को, स्वाभिमान से मारा था । ।
देश का बेटा वीर शास्त्री मिट्टी को जान से प्यारा था ।
जय जवान जय किसान, जिसने दिया नारा था । ।
देश का वीर मिट्टी में शहादत को वारा था,
ऐसा बहादुर शास्त्री, प्यारा नेता हमारा था । ।
न कभी उसने अस्त्र उठाऐ, न कभी उसने शस्त्र चलाऐ ।
गाँधीजी के पदचिन्हों पर चलकर, दुश्मनों के छक्के छुड़ाए ||
अनाज की कमी से देश को ऊबारा ऐसा नेता था हमारा ।।
देश का वीर बहादुर बेटा मिट्टी को जान से था प्यारा ।
गरीबी में जीया, साहस के साथ सम्मान से कार्य किया ।।
रेल मंत्री रहकर भी, माँ को बताया छोटा कर्मचारी था।
ईमानदारी की मिशाल देकर, सुगन्धित बाग देश में बनाया था।।
जाओ करलो कब्जा पाकिस्तान पर, युद्ध मे फैसलो सेना को सुनाया था।
वीर साहस से भरकर सेना ने भारत का परचम लाहौर में लहराया था । ।

ताशकन्द समझौते पर पाकिस्तान ने स्वागत पर बुलाया था।

पर धोके से प्रधानमंत्रीजी को जहर देकर मरवाया था । ।

न झुका कभी न टुटा कभी ऐसा प्यारा लाल हमारा ।

देश पर शहीद हो गया, भारत माता का वीर सैनिक हमारा ।।

जय हिन्द

जय भारत

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान

पर्यावरण संरक्षण

जपजी घुम्मन
पुत्री सुश्री सरबजीत कौर

असंतुलित हो गया है पर्यावरण!
बढ़ती आबादी और औद्योगीकरण,
क्या हम कोई कदम नहीं उठाएंगे?
अपनी धरती को क्या हम नहीं बचा पाएंगे?

कम होता वायु, जल और भूमि का पैमाना
क्या बंद हो गया हमे यह सब नज़र आना,
पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली
नवीकरणीय संसाधन हैं बहुत जरूरी!

वेस्ट मैनेजमेंट तकनीक अपनाएँ,
सूती बैग का करें प्रयोग बढ़ाएं,
सस्टेनेबल डेवलपमेंट और रीसाइक्लिंग पर ध्यान,
ग्लोबल वार्मिंग का है समाधान!!

****

पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तो ही सुरक्षित रहेंगे हम...

डॉ. गौतम कुमार मीणा
उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 5 जून 1972 में विश्व पर्यावरण दिवस की स्थापना की जन साधारण में पर्यावरण जागरूकता लाने के लिए की हैं। प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस का उत्सव एक विशिष्ट विषय और नारे के साथ आयोजित किया जाता है जो उस समय की प्रमुख पर्यावरणीय चिंता को संदर्भित करता है। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस शीर्ष स्तर पर आयोजित किया जाता है। यह आयोजन विश्व के किसी एक देश द्वारा आयोजित किया जाता है। भारत ने 45वें विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी करते हुए, इसकी मुख्य थीम **'बीट प्लास्टिक पॅल्यूशन'** थी।

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 के समारोह में पारिस्थितिकी तंत्र बहाली पर संयुक्त राष्ट्र दशक (2020-2030) की भी शुरूआत की, जो जंगलों से खेतों तक पहाड़ों के शीर्ष से समुद्र की गहराई तक अरबो हेक्टेयर क्षेत्र को पुनर्जीवित करने के लिए एक वैश्विक मिशन है।

विश्व पर्यावरण दिवस के 50 वर्ष पूरा होन पर 2022 को ऐतिहासिक मील का पत्थर रहा है, इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 2022 की थीम केवल **एक पृथ्वी (Only One Earth)** को संदर्भित करता है। पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिये प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सबसे ज्वलंत और महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है पर्यावरण की सुरक्षा। मानवजनित कर्मों के कारण पर्यावरण बारूद के ढेर पर खडा धधक रहा है। यदि हम अब भी पर्यावरण को नुकसान करने से बाज नही आये तो वो दिन दूर नहीं कि हमें पेय जल, खान-पान और प्राणवायु के लिए तरस जाएगें।

पर्यावरण को बचाएगें तो ही इसकी परिधि में आने वाले जल, वायु, ध्वनी और भूमि-मिट्टी मानव जीवन के साथ पेड-पौधे, जीव-जंतु, कीट-पतंगे, पशु-पक्षी, नदियां, झरनें, पहाड-पठार, आदि बच पाएंगे हैं।

आदि काल से पर्यावरण मानव और जीव-जंतुओं को पनपने और विकसित करने में योगदान देता आ रहा हैं। जिसके कारण मानव अपनी सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति पर्यावरण को अनुकुल बनाकर करता रहा हैं। जगत के सभी जीव-जंतु और मानव प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन और उपभोग भी सीमित मात्रा में किया है। जिसके कारण पर्यावरण सदियों तक जीव जगत के अनुकुल और सुरक्षित रहा है, लेकिन

साम्राज्यवादी नीति के कारण वर्चस्वादी लोगों ने बडे भूभाग के स्वामी बनने की ललक में संसाधनों को अधिक से अधिक हथियाने एवं उनका संग्रहण करने की लत ने पर्यावरण को नुकासान पहुँचाने लगे हैं।

हजारों सालों से प्राकृतिक संसाधनों, जल, जंगल और जमीन को कई पीढियों अपनी आने वाली नव पीढियों के लिए सहेज कर रखें हुए हैं। यह सिलसिला हजारों पीढियों से चला आ रहा हैं।

21 वीं सदी तक आते-आते मानवजनित ने अनेकों अविष्कार हुए। यह अविष्कार श्रम साध्य कामों को मशीन द्वारा कम श्रम और कम समय में सफलता प्राप्त की, जिससे बड़े से बड़े काम को कम से कम समय और कम मेहनत में करना संभव हो गया। इसका कारण पर्यावरण को नुकासान पहुँचाने लग गयें। आधुनिक मशीनों के माध्यम से भूमि के खनिजों और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध विदोहन होने लगा।

विकसित देशों ने विकास की दौड की प्रतिस्पर्दा करते हुए पर्यावरण को क्षति पहुँचनें में महती भूमिका रही हैं। इसमें कोई संचय नही अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशों ने पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाया हैं। आज मानव की लालची प्रवृति की वहज से जंगल के जंगल काटे जा रहे हैं। एक और कल-कारखानों की संख्या तेजी से बढ़ी हैं वातावरण में कर्बन उत्सर्जन की मात्रा की बढ रही हैं। जिसके कारण वातावरण में अन्य दुषित गैसों में बढोत्तरी और प्राणवायु की कमी हो रही हैं।

विश्व के अनेकों देश हमेशा आंतरिक और बाह्य युद्ध की विभीषिक से जन-धन की अपार क्षति के साथ पर्यावरण को भी नुकासान होता हैं। आपसी युद्ध में उपयोग किए जाने वाले गोला-बारूद्ध, तोप, बंदूकों के साथ-साथ आधुनिक हथियारों का जखीरा, रासायनिक और जैविक शस्त्रों का प्रयोग भी हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुचा रहा है।

मोटर वाहनों की संख्या में निरंतर तेजी से वृद्धि हो रही हैं जिससे कार्बन उत्सर्जन भी बढ रहा हैं पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है दिल्ली को विश्व के 10 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में गिना जा रहा है। यह सिलसिला लगातार चल रहा है।

जैविक ईधन के कारण भी कारण कार्बन उत्सर्जन की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही हैं आज ऊर्जा के उत्पादन में थर्मलों में कोयले का प्रयोग बहुतायत से हो रहा है। जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है।

हर घर जल सरकार की अच्छी योजना हैं जिससे नागरिकों को स्वच्छ पेयजल मुहैया करवाया जा सके। पेयजल की समस्या तेजी से बदत्तर स्थिति में पहुँचती जा रही है जब से नल से जल आया है केवल 50 वर्षों में कई हजारों वर्षों का धरती में संग्रहित जल का अंधाधुंध बर्बाद किया गया। दुनिया में जल संकट के बदल मडराने लगें हैं भारत के अधिकत्तर शहरों में जल संकट बडे संकट के रूप में देखा जा रहा हैं एक अंकडें के अनुसार कई बडे जिलें डार्क जोन में आ गये है यहाँ के भूजल स्तर लगभग समाप्त हो चूका है। 2017 में वर्ष पूर्व दक्षिणी अफ्रिका केप टाउन को 'जीरो डे' घोषित कर दिया यहॉ पर पेयजल अनुपलब्ध हैं। ग्लोबल कमीशन आन द इकोनोक्सि ऑफ वाटर एवं इंटरनेशनल एटमिक एनर्जी एजेंसी की इस वर्ष प्रकाशित रिपोट गहराते जल संकट को बताया है। हिमालय में 9575 हिमनद यानी ग्लेशियर तेजी से पिघलने लगे हैं। देश की बडी नदियां गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र में पानी की कमी है यह 2050 तक एक तिहायी कम रह जाएगा। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान ने दुनिया को चेता चुके हैं वर्तमान के महासचिव गुतारेस ने दुनिया और भारत में पानी की स्थिति के बारे में भयावह चित्र प्रस्तुत किया। अगला विश्व युद्ध पानी की वजह से लड़ा जा सकता हैं। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच पानी के मुद्दे को लेकर हमेशा तनातनी चलती रही हैं। उत्तरी अफ्रीका के कुछ देशों के बची भी पानी की वजह से झगड़े होते रहे हैं। इजराइल और जार्डन, मिश्र्र और इथोपिया जैसे कुछ अन्य देशों के बीच भी यह स्थिति आम हो गयी हैं।

हमें सचेत होना है हमारी पारंपरिक जल संग्रहण की व्यवस्था को दुरूस्त करें सरकार और जन सहयोग से तालाब, कुए, बावडियां, नहरें, जलाशय आदि का जीर्णोद्धार करें, वर्षा के जल को संग्रहण करें, हाल ही राजस्थान के बूँदी जिले में भ्रमण करने का अवसर मिला जहाँ हमने बूँदी शहर के मध्य रानी की बाव देखी तथा शहर के आस-पास की बावडियां देखी। तब हमें जानकारी मिली की इस राजस्थान इस जिले में बूँदी में 390 बावडियां हैं जो परंपरिक जल संग्रहण का बेहद नायाब तरीका हैं इन बावडियों के पानी से आस-पास के लोगों की जलापूर्ति होती थी। हमारा नैतिक दायित्व होना चाहिए कि हम जल का उपयोग अपनी आवश्यकतानुसार ही करें। पानी को बर्बाद ना करें। इस संबंध में सरकार ने भी समय-समय पर कई कानून बनायें हैं। विज्ञापन द्वारा जन साधारण को पानी के महत्व के बारे में बताया गया हैं। अब समय आ गया है हमें पानी को बचाना चाहिए। अन्यथा यह सच होगा कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। नीति नियम और कानून ऐसे बनाये जिससे पर्यावरण की सुरक्षा और विकास में अनुकुलता रखी जा सकें। इसकी मोनेटरिन सिस्टम हो लगातार नजर रखी जानी चाहिए।

भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के मामले में गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित स्रोतों से स्थापित विद्युत क्षमता के 40 प्रतिशत तक पहुँचने की भारत की प्रतिबद्धता हासिल कर ली गई है। पेट्रोल में 10 प्रतिशत एथेनॉल सम्मिश्रण का लक्ष्य नवंबर 2022 के लक्ष्य प्राप्त किया गया है।

अक्षय ऊर्जा की क्षमता बढाने के लिए सरकारों ने ध्यान दिया है 30 नवम्बर, 2021 तक देश की स्थापित अक्षय ऊर्जा (RE) क्षमता 150.54 गीगावाट इसमें (सौर से 48.55 गीगावाट, पवन से 40.03 गीगावाट, लघुविद्युत से 4.83 गीगावाट, जैव-शक्ति से 10.62 गीगावाट, बडी हाइड्रो से 46.51 गीगावाट) है, जबकि इसकी परमाणु ऊर्जा आधारित स्थापित बिजली क्षमता 6.78गीगावाट है। भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी पवन ऊर्जा क्षमता युक्त देश हैं।

भारत का वन क्षेत्र में विस्तार हो रहा है इसलिए शेरों, बाघों, तेदुओं, हाथियों और गैंडों की आबादी बढी हैं कुल वन क्षेत्र वर्ष 2017 में कुल भौगोलिक क्षेत्र का 21.54% था जो बढकर 2019 में 21.67% तथा यह बढकर 2021 में 21.71% हो गया हैं।

25 अप्रैल 2023 को संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश जून 2023 तक भारत हो हो जाएगा। जनसंख्या के लिए 142 करोड़ लोगों के लिए जीवन यापन के लिए हर आवश्यक सुविधाओं की जरूरत होगी।

मानव जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है जल, जंगल और जमीन इसके लिए हमें जंगलों को बचाना होगा। जंगल बचेगें तो ही पेड-पौधों बचेंगे, पहाड बचेंगे, नदिया बचेंगी, झरने बचेंगे, प्राणवायु बचेंगी, जीव-जंतु बचेंगे। कीट-पंतगें बचेंगे, इसके बचने से ही पर्यावरण बचेंगा तभी हम बचेंगे।

****

पृथ्वी का स्वास्थय बचना हैं, हमीं को हमीं से

डॉ. हीरा मीणा
पूर्व सहायक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

गाँधी जी ने कहा था उनका प्रसिद्ध कथन "पृथ्वी के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने के लिये पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हर किसी के लालच को नहीं" दुनिया भर के पर्यावरणीय आंदोलनों के लिये एक उपयोगी नारा है।

पृथ्वी दिवस अमेरिकी सीनेटर और पर्यावरणविद् ने 22 अप्रैल, 1970 में पर्यावरण शिक्षा के रूप में स्थापित किया।

रॉन कोब ने एक पारिस्थितिक प्रतीक बनाते हुए पृथ्वी दिवस के प्रतीक के रूप में अपनाया था और लॉस एंजिल्स में 7 नवम्बर 1969 को प्रकाशित किया तथा लुक मैग्जीन ने अपने 21 अप्रैल 1970 के अंक में एक ध्वज तेरह हरी और पटिट्याँ का बनाया था और अर्थ डे को 22 अप्रैल, 1970 में मनाया गया।

अर्थ डे से दो वर्ष पूर्व 30 नवम्बर 1969 को ग्लेडविन हिल पर्यावरण संकट की बढती चिंता, वियतनाम में युद्ध, समुद्र में तेल का बहाव, आदि पर्यावरणीय संकटों के कारण पर्यावरणविदों ने पृथ्वी दिवस को प्रतीक के रूप में मनाया गया। जब से अब तक हजारों घटनाएँ हमारे सामने है जिसमें पर्यावरण को बहुत क्षति हुई है। आज इस दिवस को विश्व के 195 देशों द्वारा मनाया जा रहा हैं।

हमारी पृथ्वी संकट में होगी तो हम कैसे बच पायेंगे हमारी पृथ्वी के संकट हैं:-

1. ग्लोबल वार्मिंग : हिमखण्डों के तेजी से पिघलना, इससे बाढ आदि की विपदा
2. पर्यावरण परिवर्तन : मौसम में बदलवा हो रहा है तेज गर्मी और तेजी सर्दी के साथ मौसम चक्र में परिवर्तन हो रहा है।
3. भूस्खलन
4. भूकंप की घटनाएं लगातार बढ रही है
5. बाढ और आपदाएं
6. सुखा
7. तेल रिसाव की घटनाएं (समुद्री मार्ग में पानी के जहाजों से हजारों गैलन तेल का रिसाव होता है जिससे जलीय जीवों के प्राणों के साथ-साथ जलीय वनस्पतियों भी नष्ट हो रही हैं।
8. आंतरिक और बाह्य युद्ध से विभीषिकाएं
9. फैक्ट्रियों और उर्जा संयंत्रों से निकलने वाले विषैले गैसें और प्रदूषण

10 प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध और बेतहाशा विदोहन
11 कीटनाशकों का बेतहाशा प्रयोग से पर्यावरणीय क्षति
12 विषैलें कचरें का अम्बार
13 विकास के नाम पर हजारों लाखों पेड-पौधों की कटाई (राष्ट्रीय राजमार्गों, अन्य प्रतिष्ठानों और रिसॉट निर्माण के लिए)
14 कंक्रीट के जंगलों का निर्माण
15 भूजल स्तर में लगातार कमी : देश के कई जिलें डार्क जोन में पहुँचे गये है
16 नदियों को दुषित होना
17 वातावरण में जहरीली गैसों का लगातार बढ़ना
18 प्राणवायु की कमी : वातावरण में कार्बन का बढना
19 दावानल (जंगल में भीषण आग की) की बढती घटनाएं
20 प्लास्टिक का बेतहाशा बढता प्रचलन

‘बड़े बड़े शहर बसाकर
सुकून के लिए गॉव ढूँढते हैं
बड़े अजीब हैं हम लोग
हाथ में कुल्हाड़ी लिए छाँव ढूँढते हैं’

पृथ्वी की सांसे लगातार घुटता जा रहा हैं इसका स्वस्थ खराब होने लगा है जो केवल हमारे कारण। हमें समझना होगा कि हम समय रहते इसको स्वस्थ करें। जिस रूप में हमें मिली उससे बेहतर करके नवपीढि को सौपनी चाहिए। जिससे हमारी आने वाली पीढियॉ स्वस्थ होकर जी पायें।

हम जानते हैं पृथ्वी को सबसे ज्यादा क्षति विकसित देशों ने पहुचाई हैं एक किस्सा हैं। पृथ्वी को बचाने के लिए हमें क्या करना होगा इस पर हमें सरकारों पर निर्भर नहीं रहना हमें अपनी जिम्मेदारी से नैतिक दायित्व का भी पालन करना होगा।

पृथ्वी के स्वस्थ के लिए दुनियाभर में कई संगठनों, संस्थाओं, और व्यक्तियों द्वारा निस्वार्थ कार्य किया जा रहा हैं। 200 मिलियन लोगों का 141 देशों में विश्व स्तरीय पर्यावरण के विषयों को उठा कर पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल 1990 में पूरी दुनिया में पुन:चक्रीकरण के प्रयासों को उत्साहित किया और रियो डी जेनेरियों में 192 के संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया।ग्लोबल वार्मिंग और स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहन दिया।

पृथ्वी दिवस 2000 में पृथ्वी दिवस की उमंग में अनेक नेटवर्क मे माध्यम से कार्यकर्ता, स्थानीय राष्ट्रीय और वैश्विक नीतियों में परिवर्तनों को आपस में जोड अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क में 174 देशों में 17000 संस्थानों तक पहुँच गया है, इसमें घरेलू कार्यक्रमों में 5000 समूह और 25000 अधिक शिक्षक शामिल हैं जो साल भर के कई मिलियन समुदायों के विकास और पर्यावरण सुरक्षा कार्यकर्ताओं की मदद करते हैं।

पृथ्वी स्वस्थ तब ही होगी जब –

1. वन क्षेत्रों को बढाया जाए
2. पेड-पोधें लगाकर हरियाली क्षेत्र में विस्तार किया जाए
3. वन्यजीवों की सुरक्षा, बचाव और उनकी देखरेख की जाए
4. स्वच्छ ऊर्जा की क्षमता बढायी जाए।
5. मोटर यान में जैविक ईधन के जगह वैकल्पिक व्यवस्था की जाए
6. बिजली चालित यंत्रों और यातायात के साधानों को बढावा दिया जाए
7. प्लाटिक का पूर्णत: प्रतिबंध लगाया जाए

8. समुद्री जीव-जंतु और वनस्पतियां की रक्षा की जाए
9. नदियों को स्वच्छ और स्वस्थ रखा जाए
10. आंतरिक और बाह्य युद्धों का पूर्णतया निषेध हो
11. भूजल संरक्षण के उपाय कर बढाया जाए
12. कूडा-कचरें को रिसाइकिल कर इसकी वैकल्पिक व्यवस्था हो
13. जल को वाष्पीकरण और वर्षाजल को समुद्र में जाने से बचायें
14. पानी का उचित तरह से उपभोग करें
15. खारे पानी को कम खर्च में उपयोगी जल बनाये
16. प्राकृतिक संसाधनों का उचित विदोहन हो
17. जल, जंगल और जमीन की सुरक्षा संरक्षण किया जाए
18. कार्बन उत्सर्जन को कम किया जाए
19. प्राकृतिक संसाधनों को नैतिकता से उपभोग किया जाए
20. आदिवासी जीवनशैली अपनायें

अनेक ऐसे बिंदुओं के आधार पर हमीं को हमीं से बचाना हैं हमारी पृथ्वी को। जल, जंगल, जमीन, पहाड़ों, नदियों, पेड-पौधों, जीव-जंतुओं, कीट-पतंगों सभी को पृथ्वी पर जीनें का अधिकार हैं। आदिवासियों ने इनको सदियों से सुरक्षा और संरक्षण प्रदान किया हैं। विश्व में 50 करोड आदिवासी हैं जिसमें भारत में सर्वाधिक 750 से अधिक समुदाय, कबीलें निवास करते हैं जिनकी संख्या 16 करोड है। आज भी भील आदिवासी समुदाय के कुछ बुजुर्ग सुबह उठते ही दोनों हाथों से धरती को छूकर कहते हैं 'हे धरती मां, पेट-पालन की मजबूरी की वजह से दिन भर मुझ तेरे ऊपर चलना पड़ेगा, मुझे माफ़ करना। बैंगा आदिवासी धरती पर कभी हल नहीं चलाते उनका मानने हैं कि वह अपनी माँ हल नहीं चलायेगें, नंगे पावे रहेगें, पेड-पौधों से गिरें फूल-फल आदि का ही सेवन करेंगे। आदिवासियों के बहुत से समुदाय पेड से फूल और फल कभी नही तोडते, पकने पर अपने आप गिरते, उन्ही का उपयोग करते हैं। भारत के सभी आदिवासियों में एक प्रमुख रूढि प्रथा हैं कि उनके समुदाय और कबीलें के एक वृक्ष, एक पक्षी, एक पक्षी की रक्षा करेंगे वह उनका टोटम होगा। उनकी उपस्थिति में ही जन्म, मरण, परण की व्यवस्था संपन्न होगी। 750 आदिवासी समुदाय में से एक हमारा मीणा समुदाय हैं इसमें 5200 गोत्र है। सभी 5200 गोत्र के अलग-अलग टोटम और धराडी हैं। जो अपनी गोत्र के एक पेड/वृक्ष, एक पक्षी, एक पशु की रक्षा करेगें। इस प्रकार गोड़ आदिवासियों के भी हजार गोत्र है ऐसे ही सभी 750 आदिवासी समाज, समुदाय और कबीलों में यह व्यवस्था सदियों से प्रचलित रही हैं आज भी यह रूढि व्यवस्था समाजों में जारी हैं। यूएनओ ने कहा भी है गॉवों की और लोटों जीना है तो आदिवासी शैली को अपनाओं। करोनो काल में हमने दिल्ली में देखा किसी प्रकार वातावरण साफ हो गया, हवाएं स्वच्छ हो गयी, पक्षियों का कलरव, दिल्ली में साफ आकाश देखा जिससे दूर-दूर की बिल्डिंगें दिखाई दे रही थी।

इस प्रकार की व्यवस्था ईको में संतुलन बनाये रखती हैं। हमारे समाज को पृथ्वी की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करने होगी।

आसमा से उतरकर जमीन पर आ गई हैं
अब बात घूम फिर कर फिर वही आ गई है
इस जमी को बचना है हमीं से हमको
ये जिम्मेदारी भी देखिए हमी पर आ गई है

****

पिता

राजेश अग्रवाल
कार्यरत : मुख्य महाप्रबंधक (वित्त)
पावर फाइनेंस कोरपोरेसन लिमिटेड, दिल्ली

क्या होता है पिता,
एक इंसान....! जिसके बच्चे हैं,
या एक फरिश्ता....! जिसके बच्चे हैं।

आज मैं आपको एक दास्तान सुनाता हूँ,
आइये आपको एक पिता से मिलवाता हूँ,

पिता का जन्म होता है दादा के लगाव से,
पिता का जन्म होता है दादी के चाव से,
पिता का जन्म होता है बाबा की फटकार से,
पिता का जन्म होता है माँ के प्यार से,
अपने बाबा की अंगुली पकड़कर सीखता है दुनियादारी,
पिता बचपन से करता है पिता बनने की तैयारी।

भाइयों पर रौब जमाना,
रूठी हुई बहन को मनाना,
पिता के काम में हाथ बटाना,
माँ के ऊपर अपना ज़ोर चलाना,
घर-गृहस्थी की गाड़ी में...एक पहिया बन कर जुड़ जाता है,
शादी और बच्चों के बिना भी वो पिता बन जाता है।

फिर एक दिन हो जाती है उसकी शादी
खत्म हो जाती है खुले आकाश में उड़ने की आज़ादी,
आंटे और चावल का भाव उसे अब है समझ में आता,
कभी फल नहीं ला पाता कभी सब्जी भूल जाता,
पिता पैदा होने लगता है पत्नी की कही सुनाई में,
पिता पैदा होने लगता है गर्भवति पत्नी की उबकाई में।

जीवन बीतने लगता है उसका गृहस्थी की चक्की चलाने में,
कहाँ रहता है उसे शौक अब दोस्तों से मिलने मिलाने में,
सास बहू के बीच बनाते बनाते तालमेल
बन जाती है उसके जीवन की रेल,
पिता... पिता बनने लगता है अपने नन्हें मुन्ने की शैतानी में,
पिता... पिता बनने लगता है बढ़ते हुए खर्च की खींचातानी में।

याद रहती है उसे बेटे की पढ़ाई,
चिंता करते रहता है बिटिया अभी तक घर नहीं आई,
माँ बाबा की बढ़ती हुई उम्र, बढ़ती हुई बीमारियाँ,
खत्म होने का नाम नहीं लेती जीवन की दुश्वारियां,
घर में सबकी जरूरत का सामान जुटाने में,
पिता जूटा रहता है खुद को पिता बनाने में।

अपनी पत्नी ने साथ रोमांस..?
जाने कब मिला था उसे ये चांस,
पत्नी की अधूरी इच्छाओं का तो कभी मान भी नहीं कर पाता,
जवानी ठीक से जी नहीं कि बुढ़ापा नजदीक आ जाता,
एक पिता बनने के अरमान उसने जबसे पाले,
तबसे कितने ही और अरमान उसने कल पर टाले।

सबके हँसने में हँसना,
सबके रोने में रोना,
दिन भर मसक्कत में जागना,
रात भर जागते – जागते सोना,
अगर वो अपने आप को पूरा का पूरा नहीं खपाता,
तो कहिए फिर कैसे वो पिता बन पाता।

परिवार में सिमटा नज़र आने लगता है उसे अपना संसार,
सिमट कर रह जाता है उसका सामाजिक सरोकार,
खुद को मिटा कर भी वो सबको खुश नहीं रख पाता,
वो सबको मनाता रहता है उसे तो रूठना भी नहीं आता,
काँटे कितनी ही बार चुभे वो चुपचाप सहता है,
वो अच्छा पिता बन जाए इसी कोशिश में लगा रहता है।
पिता बिटिया का मान है,
पिता बेटे कि शान है,
पिता पत्नी का अरमान है,
पिता माँ बाप का एहसान है,
पिता से घर है, पिता घर कि पहचान है,
पिता एक इंसान नहीं, फरिश्ता है...भगवान है।

****

पर्यावरण सुरक्षा

मनोज पुनिया
उप महाप्रबंधक (लेखा)
एन एम डी एफ सी

पर्यावरण सुरक्षा से तात्पर्य मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाले क्षरण और विनाश से प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के सुरक्षा , सुरक्षा और सुरक्षा के लिए की गई कार्रवाइयों से है। इसमें पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के नकारात्मक प्रभावों का प्रबंधन, शमन और रोकथाम शामिल है।

पर्यावरण सुरक्षा की आवश्यकता इस अहसास से उत्पन्न होती है कि हमारा ग्रह और इसके संसाधन सीमित और नाजुक हैं। हाल के दिनों में तेजी से औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने पर्यावरण पर भारी दबाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जैव विविधता की हानि हुई है।

पर्यावरण की रक्षा के लिए, व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों को पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए सचेत और ठोस प्रयास करने चाहिए। यह कार्बन उत्सर्जन को कम करने, प्राकृतिक संसाधनों के सुरक्षा , अपशिष्ट पदार्थों को रिसाइकिल करने, पेड़ लगाने, पर्यावरण के अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देने और गैर-नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग को कम करने जैसे विभिन्न उपायों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

पर्यावरण की रक्षा के आवश्यक तरीकों में से एक कार्बन उत्सर्जन को कम करना है। मानव गतिविधियों से कार्बन उत्सर्जन, जैसे कि जीवाश्म ईंधन को जलाना, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए, कार्बन उत्सर्जन को कम करने से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद मिल सकती है। यह सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देकर, ऊर्जा की खपत को कम करके और ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।

पर्यावरण की रक्षा के लिए जल, जंगल और वन्य जीवन जैसे प्राकृतिक संसाधनों का सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है। इसमें स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना शामिल है जैसे कि जल-बचत तकनीकों का उपयोग करना, अपव्यय को कम करना और वनों की कटाई और वनीकरण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।

अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण पर्यावरण की रक्षा का एक और तरीका है। पुनर्चक्रण लैंडफिल में समाप्त होने वाले कचरे की मात्रा को कम करने में मदद करता है और सामग्री के पुन: उपयोग को बढ़ावा देता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के सुरक्षा में मदद मिलती है।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और गैर-नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग को कम करने जैसी पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को बढ़ावा देने से भी पर्यावरण सुरक्षा में योगदान मिल सकता है। सरकारें ऐसे कानून और नीतियां बना सकती हैं जो स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देती हैं और पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करती हैं।

अंत में, हमारे ग्रह और इसके संसाधनों की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण सुरक्षा महत्वपूर्ण है। पर्यावरण पर मानव गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए सचेत प्रयास करके, हम अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य बना सकते हैं।

****

नया सवेरा

मीतू माथुर बधवार, (अनुवादक)
स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड,

'वेक अप! वेक अप! दिस इज़ ए ब्रेण्ड न्यू मॉर्निंग', मानसी ने लेटे-लेटे ही तकिए के नीचे से मोबाइल निकालकर अलार्म बंद कर दिया। कुछ समय पहले की बात होती तो इस अलार्म टोन से वह कुढ़ जाती...ब्रेण्ड न्यू मॉर्निंग...हुंह! काहे की न्यू मॉर्निंग। रोज़ एक ही तरह से तो बीतता है उसका दिन-वही चूल्हा-चक्की, वही घर-गृहस्थी। कहां कुछ नया है? पर आज उसके होंठों पर मंद मुस्कान खेल रही थी। जब से उसने नया स्मार्टफोन लिया था, उसके तो सुबह से लेकर शाम तक-मानो सब बदल गए थे।

उठने लगी तो देखा कि व्हाट्सएप पर कविता का संदेश आया हुआ था। खूब चटख रंग के फूलों से अत्यंत कलात्मक तरीके से स्क्रीन पर लिखा था, 'शुभ प्रात:, आपका दिन मंगलमय हो'। उसका मन खुश हो गया। कविता उसकी स्कूल के दिनों की सहेली थी और कुछ महीने पहले ही फेसबुक के ज़रिए उन दोनों की करीब 15 साल बाद फिर से मुलाकात हुई थी। 'शुक्रिया, सुप्रभात' का संदेश लिखकर गुनगुनाते हुए वह गुसलखाने की तरफ बढ़ी। फ्रेश होकर रसोईघर में आई तो सबसे पहले ईयरपीस कानों में लगाया और मोबाइल पर हरि ओम शरण के अपने पसंदीदा भजन लगा लिए। स्कूल के दिनों से ही मानसी की आदत सुबह उठते ही भजन सुनने की थी पर विवेक की अक्सर नाइट शिफ्ट होने के कारण उसने शादी के बाद से ऐसा करना छोड़ दिया था। म्यूजिक सिस्टम चलने पर विवेक की नींद में खलल पड़ता था पर अब एक छोटे से ईयरपीस ने उसकी समस्या हल कर दी थी।

चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ाकर वह नाश्ते के लिए सब्जियां काटने लगी। तीन दिन बाद विवेक अपने जयपुर दौरे से लौट रहे थे और अब एक घंटे में उदयपुर पहुंचने ही वाले थे। विवेक को सब्जियों वाले पोहे पसंद हैं पर अक्सर वो आलू-प्याज़ डालकर ही इतिश्री कर लेती है। आज वो खूब सारी सब्जियां डालकर पोहे बनाएगी। उसके हाथ चॉपबोर्ड पर सब्जियां काटने में लगे थे पर मन पंख लगाकर अतीत की गलियों में जा पहुंचा था...शादी के समय वो एक निजी कॉलेज में व्याख्याता थी पर बेटी अवनि के होने के बाद उसे नौकरी छोड़नी पड़ी थी। विवेक का कहना था कि इस समय अवनि को मानसी की सबसे ज्यादा ज़रूरत है, नौकरी तो वो जब चाहे कर सकती है। वह शुरू से ही अपने करिअर को लेकर बहुत महत्वाकांक्षी रही थी पर विवेक की बात निराधार नहीं थी, इसलिए उसने भी नौकरी छोड़ने के लिए आसानी से सहमति दे दी थी।

जब तक अवनि स्कूल नहीं जाती थी, तब तक तो उसका दिन कैसे कट जाता, उसे खुद पता नहीं चलता था पर अब दो साल से अवनि स्कूल जाने लगी थी। वो घर में बैठी बोर होती पर अब भी अवनि इतनी बड़ी नहीं हुई थी कि वह उसे घर पर अकेला छोड़कर काम पर जा सके। वो छटपटाकर रह जाती। तड़के पांच उठना और घर के कामकाज में जुत जाना, यही उसका जीवन हो गया था।

सुबह साढ़े छह बजे अवनि की स्कूल बस सोसाइटी के गेट पर पहुंच जाती है। उठते ही पहले उसका टिफिन बनाना, फिर पतिदेव को चाय पकड़ाकर बिटिया को जगाना और स्कूल के लिए तैयार करना। उस पर,

अवनि को जगाना भी कोई कम आफत का काम थोड़े ही है। कितने भी लाड़ जताकर उठाओ, वो बार-बार कुनमुना कर सो जाती है। कभी-कभी तो उसे अवनि पर तरस आता है। इतने छोटे बच्चे का सुबह-सुबह स्कूल भागना...किसी सज़ा से कम है क्या? इतनी सुबह तो बिस्तर का मोह बड़े-बड़े भी मुश्किल से ही छोड़ पाते हैं।

बहरहाल, यंत्रवत् यही सब करते-करते घड़ी की सुई कब 9 पर आ टिकती, उसे पता तक नहीं चलता। सुबह 9 बजे जब पतिदेव भी दफ्तर चले जाते तो वो तसल्ली से अपने लिए खूब खौलाकर अदरक-दालचीनी वाली चाय बनाती। उसके बाद घर-गृहस्थी के बाकी काम। करीब 12 बजे अवनि घर लौटती तो उसे खाना खिलाकर सुला देती और घंटा-दो घंटा टी.वी. देखकर खुदकर भी सो जाती। उठने के बाद फोन पर दोस्तों से गप्पबाज़ी और शाम होते ही फिर वही घर-गृहस्थी के पचड़े। दिन यूं ही कट रहे थे-बिल्कुल एक जैसे पर मानसी के मन का कहीं कोई कोना रीता ज़रूर था जिसका ठीक-ठीक आभास शायद खुद उसे भी नहीं था। इसलिए कुछ समय से उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था...कितनी ही बार वह विवेक को तुनककर जवाब देती और अवनि को भी बात-बेबात फटकार देती।

विवेक उसकी इस बैचेनी का कारण समझते थे। वे भी इस अपराधबोध से ग्रस्त रहते कि इतनी मेधावी होने के बावजूद मानसी ने उनकी घर-गृहस्थी संभालने के लिए अपने करिअर से समझौता किया। वो अक्सर मानसी से कहते, ''कोशिश करो कि खाली समय में टी.वी. देखने या फोन पर बातें करने की बजाय कोई अच्छी किताब पढ़ो या संगीत सुनो।'' इस पर मानसी और चिढ़ जाती, ''दिनभर घर के काम में खटने के बाद थोड़ी देर टी.वी. देखना या सहेलियों से बात करना भी गुनाह है क्या?'' विवेक चुप रह जाते। छुट्टी के दिन मानसी और अवनि को बाहर घुमाने ले जाकर, रेस्त्रां में खाना खिलाकर अपनी तरफ से कुछ भरपाई करने की कोशिश करते। एक-आध दिन तो मानसी खुश रहती पर फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाता।

मानसी का जन्मदिन आने वाला था। ''मानसी! इस बार जन्मदिन पर क्या तोहफा लेना चाहती हो''? विवेक ने पूछा। ''मेरे मोबाइल में कुछ दिनों से आवाज़ साफ नहीं आ रही। सोच रही हूं वही ले लूं।'' ''ठीक है, आज शाम तैयार रहना। हम तुम्हारा नया मोबाइल लेने चलेंगे।'' दुकान पर वह विवेक से कहती रही कि उसे कोई सस्ता-सा मोबाइल दिला दे, उसे कौन-सा बाहर जाना है। घर पर ही तो रहना है पर विवेक उसे आधुनिक एंड्रॉयड मोबाइल दिलाकर ही माने। उनका तर्क था कि इस पर इंटरनेट और अनेक एप्लिकेशन्स होने से वह उसका कई तरीकों से इस्तेमाल कर सकेगी। लगे हाथ ही उन्होंने उसके मोबाइल में इंटरनेट कार्ड भी डलवा दिया और घर आते ही उस पर अनेक एप्लिकेशन्स डाउनलोड कर दीं। इसके बाद उन्होंने मानसी का फेसबुक अकाउंट बनाया और सर्च ऑप्शन में जाकर पहला नाम लिखा, 'कविता कुलश्रेष्ठ' और ढेरों कविता कुलश्रेष्ठ मोबाइल स्क्रीन पर प्रकट हो गईं। अचानक तीसरे नंबर पर अपनी बचपन की सहेली की तस्वीर देखकर मानसी ठिठक गई। 'अरे! कितनी अलग लग रही है कविता', कविता बदल ज़रूर गई थी पर उसका मस्तमौला अंदाज़ वही पुराना था जो तस्वीर में, स्केटिंग करते हुए भी उसके चेहरे पर साफ नज़र आ रहा था। विवेक ने मानसी की तरफ से लिखा, 'हैलो!' और कविता को लॉग इन करना सिखाकर सोने चले गए। अगले दिन तड़के विवेक को तीन दिन के लिए लखनऊ दौरे पर निकलना था, इसलिए मानसी भी रसोईघर में जाकर सुबह की तैयारियों में लग गई।

सुबह करीब पांच बजे विवेक स्टेशन के लिए रवाना हो गए। शनिवार होने के कारण अवनि की छुट्टी थी, इसलिए मानसी भी देर तक सोने के मूड में थी पर अचानक मोबाइल पर 'टन् न् न्' की आवाज़ से चौंक गई। देखा तो फेसबुक पर कविता का मैसेज था, 'हाय!!!' मानसी तो खुशी के मारे उछल ही पड़ी। एक बार फिर टन् न् न् की आवाज़ हुई और उसका दूसरा संदेश आया, 'मानसी कैसी है? कहां है आजकल?' उसके बाद

तो दोनों सहेलियों के बीच बातचीत का जो दौर शुरू हुआ, वो कविता के बच्चों के स्कूल जाने का समय हो जाने पर ही खत्म हुआ। अवनि अभी सोई हुई थी, इसलिए मानसी फोटो एल्बम में जाकर उसकी तस्वीरें देखने लगी। घूमने-फिरने के साथ-साथ ईनाम लेते हुए भी कविता की कई तस्वीरें एल्बम में लगी थी। मानसी को कुछ समझ नहीं आया। पिछले दो घंटों की बातचीत में उसने इतना तो जान लिया था कि कविता भी उसी की तरह उदयपुर में रह रही थी और एक गृहिणी थी। उसके पति एक सरकारी कंपनी में उच्च पद पर थे और इन दिनों जयपुर में पदस्थापित थे। बच्चों की पढ़ाई के कारण बाकी परिवार अभी उदयपुर में ही रह रहा था।

अगले दिन कविता ने उसे अपने घर आने का न्यौता दिया था। मानसी सुबह से ही बहुत रोमांचित थी, सो जल्दी-जल्दी घर का काम निपटाकर कविता के बताए पते पर पहुंच गई। कविता के चेहरे पर वही चिर-परिचित मुस्कान थी। अवनि जल्द ही कविता के बच्चों के साथ घुल-मिल गई। ढेर सारी बातों के बीच मानसी ने कविता से ईनाम वाली तस्वीरों के बारे में पूछा। ''अरे, वो तो मेरी वेबसाइट को सर्वश्रेष्ठ कुकरी वेबसाइट का पुरस्कार मिला था, उसकी हैं।'' कविता की आंखों में अनोखी चमक थी। ''पता है, दो महीने पहले ही मैंने एक अंतर्राज्यीय कुकिंग प्रतियोगिता जीती है जिसके पुरस्कार के रूप में अगले महीने मुझे संजीव कपूर के चैनल फूड-फूड में गेस्ट शेफ के तौर पर जाने का मौका मिल रहा है।''

कविता अपनी ही रौ में बोली चली जा रही थी। ''लेकिन तुझे यह वेबसाइट शुरू करने की सूझी कैसे?'' ''बस, बच्चों के स्कूल जाने के बाद घर में बैठी-बैठी बोर होती थी तो टाइम पास करने के लिए कोई न कोई व्यंजन बनाती रहती थी। एक दिन बेटी स्वाति ने अपने फेसबुक अकाउंट पर मेरे बनाए गोभी-मुसल्लम की फोटो खींचकर डाल दी। फोटो को जमकर लाइक मिले और उसके दोस्तों ने 'यमी', 'देखते ही मुंह में पानी भर गया', 'हमें कब खिला रही हो' जैसे कमेंट्स लिखे। उसके बाद तो वो मेरा बनाया हर व्यंजन फेसबुक पर डालने लगी। उन पर आए कमेंट्स पढ़ने के चाव में मैं भी कंप्यूटर पर बैठने लगी और धीरे-धीरे दूसरी कुकिंग वेबसाइट्स भी देखने लगी। फिर अपनी एक वेबसाइट बनाई और उस पर नए-नए व्यंजन डालने लगी। धीरे-धीरे लोगों को मेरी रेसिपीज़ बहुत पसंद आने लगीं और मेरा हौंसला बढ़ता गया।''

मानसी हैरान थी। कविता स्कूल के दिनों से ही बेहद अंतर्मुखी थी। पढ़ाई में भी उसे औसत ही कहा जा सकता था पर आज उसने भोजन पकाने जैसे अपने साधारण-से शौक को आगे बढ़ाकर एक मुकाम हासिल कर लिया था और एक वह है, पढ़ाई-लिखाई में शुरू से अव्वल रहने के बावजूद दिन-रात किलसती रहती है। क्यों नहीं वह खुद अब तक अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए नौकरी से इतर कोई मंच खोज पाई? यही सब सोचते-सोचते मानसी घर लौट आई।

कविता से कुछ घंटों की मुलाकात ने उसके व्यक्तित्व को झकझोर कर रख दिया था। अब जैसे ही खाली समय मिलता मानसी अपने नए मोबाइल में इंटरनेट के जरिए नई-नई चीज़ें देखतीं और ज्ञान के इस अथाह समुद्र को देखकर हैरान रह जाती। धीरे-धीरे उसने इंटरनेट पर कुछ ऐसी कंपनियों से संपर्क किया जो घर बैठे ही लेखन और अनुवाद का काम देती थीं और ईमेल के ज़रिए ही काम पूरा करके भेजना होता था। इस काम से उसे आमदनी तो बहुत ज्यादा नहीं होती थी लेकिन इससे मानसी का व्यर्थताबोध ज़रूर दूर हो गया था। उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता जा रहा था। अब वह इंटरनेट पर खुद ही बिजली, टेलीफोन आदि के बिल जमा करवाने लगी थी। फेसबुक पर उसने अपनी पुरानी सहेलियों और रिश्तेदारों को खोजने का अभियान छेड़ दिया था और कितने ही भूले-बिसरे रिश्तों से एक बार फिर स्नेह-सूत्र जुड़ गया था। एक छोटे-से मोबाइल ने उसका जीवन बदलकर रख दिया था। अखबार के ई-संस्करण भी उस छोटी-सी स्क्रीन पर सिमट आए थे। यू-ट्यूब पर देखे प्रेरक वक्ताओं के भाषण भी उसके व्यक्तित्व को एक नया ही रंग दे रहे थे।

यहां तक कि अवनि को नए रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के लिए भी इंटरनेट बहुत अच्छा स्रोत साबित हो रहा था।

अचानक डोरबैल की आवाज़ से उसके विचारों का क्रम टूटा। चाय का पानी खौल-खौलकर आधा रह गया था। उसने फटाफट गैस बंद करके दरवाज़ा खोला। सोसाइटी का गार्ड एक लिफाफा लिए खड़ा था। अपने नाम का लिफाफा देखकर उसे कुछ अचरज हुआ। खोला तो उसमें दो हज़ार रुपए का एक चैक था। साथ में एक पत्र था जिसमें अत्यंत संक्षेप में लिखा था, 'आपके द्वारा भेजा गया लेख हमारी प्रतिष्ठित पत्रिका 'सुखदा' में प्रकाशन के लिए चयनित हुआ है। बधाई! मानदेय राशि का चेक संलग्न है।' मानसी की खुशी का पारावर नहीं था। कितने ही वर्षों बाद आज उसके हाथों में खुद उसकी कमाई थी...उसकी आंखों से खुशी के आंसू झरने लगे। उसने फटाफट अपना मोबाइल उठाया और टाइप करने लगी, ''शुक्रिया विवेक ! एक ब्रेण्ड न्यू लाइफ़ के लिए।''

****

लालच भली बला

पूनम सुभाष
सेवानिवृत मुख्य राजभाषा अधीक्षक
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम

सुनंदा अपने संयुक्त परिवार के साथ अपने स्वर्गीय पति राधेश्याम के पार्थिव शरीर के पास चुपचाप बैठकर अपने चारों बेटों के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। दो बड़े बेटे गांव के पास पहुंच गए थे लेकिन विदेश में रह रहे छोटे दोनों बेटों ने अति व्यस्तता का बहाना कर अपना पल्ला झाड़ लिया था। गांव के अन्य परिवारों के साथ अपने जेठ जेठानी उनके बहु बेटों बच्चो और बेटी बबीता और उसके पति और बच्चों के साथ रहने के बावजूद उसकी आंखें प्रतीक्षारत थीं।

पंडित जी दाह संस्कार के लिए जल्दी करने के अनुदेश दे रहे थे क्योंकि उनके अनुसार 2 बजे के बाद पंचक प्रभाव शुरू हो जाएगा जो शवदाह के लिए सर्वथा अनुपयुक्त समय था। 12 बजे से ऊपर का समय हो चला था । बड़े बेटों को बार बार फोन किया जा रहा था। कुछ ही देर में दोनों बड़े बेटे वहां पहुंच गए उनके साथ उनकी पत्नियां तो थीं पर बच्चे नही थे पंडित जी बोल उठे ''अरे इनके पोतों को नहीं लाए'' पर पंचक विचार से बिना देरी किए स्वर्गीय राधेश्याम जी दो बेटों और दो भतीजों के कांधों पर सवार होकर अंतिम यात्रा की ओर रवाना हो गए।

दाह संस्कार के बाद सभी घाट से लौटे तो सुनंदा के जेठ बंशीधर अपने भतीजों से पूछ उठे ,'' तुम्हारे बच्चे क्यों नहीं आए क्यों उन्हें दादाजी के चले जाने का कोई गम नहीं।'' बडा अनंत खिसियाकर बोला ''ताऊ जी बच्चों को गांव अच्छा नहीं लगता इसतिए हमने मजबूर नहीं किया। '' शाबाश बेटा तुम्हारी औलाद भी तुम्हारे ही जैसी तो होगी न। कोई बात नही वक्त तुम्हारा भी आना ही है।'' आकाश भी अनंत की भांति चुपचाप सिर झुकाकर सुनता रहा।

पूरी बिरादरी के सामने पंडित जी ने सारी रस्मों और तेहरवीं की घोषणा की तो अनंत और आकाश तो सकते में आ गए कि पूरे 13 दिन गांव के लोगों की सवालिया नज़रें, ताऊ जी के व्यंग्यबाण लगातार सहने पड़ेंगें। इसके सिवा कोई चारा भी नहीं था और फिर गोपाल मामा जिनके वह बहुत चहेते थे, ने बता दिया था कि स्वर्गीय राधेश्याम जी की वसीयत भी तेरहवीं के बाद ही खोली जाएगी।

उधर सुनंदा के पास सिर्फ ताऊ जी की बेटी बबीता जिसे सब भाईयों के बीच की होने के कारण बिचकी पुकारा जाता था , बैठी थी ताऊ जी की बहुएं पूरी बिरादरी के भोजन व्यवस्था में लगी थीं । सुनंदा की अपनी बहुएं दरी के कोने में बैठ आने जाने वालों को हाथ जोड़कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान रही थीं।

बेटों के पास आते ही सुनंदा सिसकारी भरकर रोने लगी। अनंत ने कहा '' मां क्यों परेशान हो रही हो पिताजी को जानलेवा कैंसर जैसी बीमारी थी समझो उनकी तो मुक्ति ही हुई है । सुनंदा का मन हुआ दहाड़ मार रो पड़े और चिल्लाकर कहे उनकी बीमारी के लिए तुम बेटों ने क्या किया, अंत समय तक तुम सबको याद करते रहे। पर रिश्तेदारों का ध्यान करते हुए दबी आवाज में बोली, '' बेटा आप लोगों को ने तो उनको तन से ज्यादा मन का दर्द दिया, कभी उनका हाल तक नहीं पूछा। आज यदि तुम्हारे ताऊ जी ने अपने हिस्से की जमीन गिरवी रखकर तुम चारों को नहीं पढ़ाया होता तो तुम हमारे पास ही होते। उन्होंने अपने बच्चों को शहर न भेजकर तुम्हें भेजा और तो और दानों छोटों को तो विदेश तक भेजा।'' आकाश ने कहा '' मां अब कौन सी जमीन गिरवी पड़ी है सब अपने पास ही तो है। वो तो तुम्हारे ताऊ जी के बेटों की मेहनत और तुम्हारे पिताजी की भविष्य निधि की राशि से हो गया वरना हमारे पास क्या रह जाता''

अनंत और आकाश इस जिरह के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे। रात होते होते उन्होंने अजय और अभय को भी अमेरीका में फोन लगाकर तेहरवीं पर वसीयत खुलने की बात बताकर आने के निर्देश दे दिए।

सुनंदा ने यह सब अपनी आंखों से देखा और कानों से सुना। उसकी बर्दाश्त से बाहर हो चला था बिचकी के सीने से लगकर रो पड़ी । बिचकी से भी अपने बड़े भाईयों की निष्ठुरता देखी न जाती थी।

तेहरवीं से दो दिन पहले अजय और अभय भी गांव पहुंच गए थे। छोटे भाईयों को देखकर बिचकी भागकर उनसे लिपटकर रोने लगी किंतु उनकी शुष्कता देखकर पीछे हट गई। उनमें तो बडे भाईयों की औपचारिकता भी नहीं थी।

तेहरवीं का दिन भी आ पहुंचा रस्म पगड़ी के बाद सांझ होते होते चारों भाई गोपाल मामा जो वकील भी थे के इर्दगिर्द वसीयत सुनने को बेताब थे । गोपाल मामा ने वसीयत कल सुनाने की बात कही।

सुबह नाश्ते के बाद गोपाल मामा ने ताऊ जी के परिवार के सभी सदस्यों, सुनंता और उसके बेटे बहुओं को बुला भेजा। उन्होंने बताया कि राधेश्याम जी को लगने लगा था वह नहीं बचेंगे इसलिए यह वसीयत उन्होंने पिछले साल ही लिख दी थी।

वसीयत के मुताबिक दिवंगत राधेश्याम जी ने अपने खेतों की जमीन बड़े भाई बंशीधर जी के दोनों बेटों के नाम कर दी थी। पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई हवेली के पीछे की जमीन जिसमें कभी गाए, बैल बांधे जाते थे को पक्का करवा कर अत्यंत सुदर ढंग से तीन कमरों का मकान बनवा दिया था, उसे बिचकी यानि बबीता और उसके पति के नाम कर दिया था। हवेली की मालकिन सुनंदा ही रहेगी और सुनंदा के संसार से जाने के बाद चारों बेटे उसे बेचकर अपना हिस्सा ले सकते थे।

अनंत, आकाश, अभय और अजय को तो मानों काटो तो खून नहीं । सबके मुंह पर ताला लग गया था।

शाम होते ही सुनंदा को अकेला पाते ही आकाश बोल पड़ा ''लगता है पिताजी को हम चारों से जरा भी लगाव नहीं था। सब कुछ ताऊ जी के बच्चों के लिए । हमारे लिए क्या..... तभी अभय भी कहने लगा और यह बिचकी शुरू से लालची राखी, भैया दूज पर भी कैसे कैसे उपहारों के लालच करती थी और आज तो पूरा मकान ही लूट कर ले गई लालची कहीं की।'' अनंत भी चुप नहीं रहा बोला '' मुझे तो ताऊ जी की कोई साजिश लगती है।'' आकाश ने कहा'' हमें तो हमारा अपमान लग रहा है।''

सबकी बातें सुनकर सुनंदा फट पडी ''कुछ तो शर्म करो जरा बताना शहरों में पढ़कर नाम कमाने के बाद पिता की बीमारी का कितना ध्यान रखा। चाहते तो अपने पास ले जाते, अच्छा इलाज करवाते, अरे तुमने तो कभी चार पैसे भी नहीं भेजे, कभी पूछा कितना खर्चा हो रहा है उनकी बीमारी पर। अच्छा यह सब छोड़ो जरा बताओ तो पिता जी को देखने कितनी बार आए। पास बैठकर हाल ही पूछ जाते वो अंत समय तक तुम सबकी सूरतों के लिए तरसते रहे। और आज जिन ताऊ जी के बलिदान के कारण लाट साहब बने फिरते हो उनकी साजिश नजर आती है। रही बात बिचकी के लालच की तो उसने और उसके पति ने अस्पताल डॉक्टर दवाईयां किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी। ये सब नहीं होते तो मैं तो बिल्कुल अकेली थी यहां तुम्हारे ताऊ जी और उनके बेटे बहुओं ने खर्च का कभी सवाल भी नहीं उठाया। अगर बिचकी के बचपन के लाड प्यार को भी लालच का नाम दे रहे हो तो बताना इतने सालों से बहन को कोई उपहार भेजा है। ''

''पर माँ '' अजय कुछ कहने ही लगा था कि सुनंदा बोली खबरदार अब कुछ न कहना रही बात लालच की तो सुन लो बिचकी अगर लालची है तो तुम तो और भी दस कदम आगे हो तुम सब कौन से बाप की मैयत पर आए हो तुम भी तो वसीयत के लालच से ही यहां हो। अरे बेशर्मो अगर लालच ही सब कुछ है तो मैं तो कहूंगी **''लालच भली बला।''**

****

दंगा और प्रवासी मजदूर

प्रतीक साव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एमएसटीसी लिमिटेड

मैं एक प्रवासी हूँ।
लोग प्यार से मुझे अरे.... ओ.... बिहारी.....कहते थे।
दिल्ली में मेरी एक रेड़ी थी।
बहुत छोटी सी
एक बहुत बड़ी भीड़ ने उसे कोई...
सप्ताह पहले
आग के हवाले कर दिया
मैं एक प्रवासी हूँ।

साहब रेड़ी में मेरी गुड़िया कि तस्वीर थी...
मैं उसे रोज देखा करता था।
अब ना देख पाऊँगा
गुड़िया गांव में है।
मैं एक प्रवासी हूँ।

मुझे आज भी याद है।
धुंध की वह सुबह
जब कुछ अपरिचित युवाओं ने
अपनी अस्पष्ट मांगों के लिए
मेरे जीविका के एक मात्र सहारे को मुझसे छिन लिया
मै एक प्रवासी हूँ

लोग कहते हैं वे धार्मिक थे।
धर्मांध थे ।
मैंने उन्हें अपनी रोटी छिनते देखा है।

मेरा रोना, गिड़गिड़ाना, हाथ जोड़ना
उन्हें दया नहीं आयी
मैं एक प्रवासी हूँ।

मैं अब इस दुनिया में नहीं हूँ
मेरी गुड़िया की तस्वीर भी नहीं है।
बस एक चौराहा है।
जहां आगजनी हुई थी।
और एक दीवार पर लिखा है...
अग्निपथ.... अग्निपथ..... अग्निपथ.....

****

पंजीकृत कार्यालय

प्रथम तल, कोर-4 ए, ईस्ट कोर्ट,
भारत पर्यावास केन्द्र, लोदी रोड़,
नई दिल्ली – 110003
दूरभाष : +91-11-24682206-19
फैक्स : +91-11-24682202

कॉर्पोरेट कार्यालय

तीसरी मंजिल, अगस्त, क्रांति भवन,
भा◌ीकाएजी कामा प्लेस, नई दिल्ली – 110066
दूरभाष : +91-11-26717400 - 12
फैक्स : +91-11-26717416
ई-मेल: cmd@ireda.in

इरेडा बिजनेस सेंटर

इरेडा बिजनेस सेंटर
भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
एनबीसीसी कार्यालय कॉम्प्लेक्स, ऑफिस ब्लॉक नं. II
प्लेट बी, सातवाँ फ्लोर, ईस्ट किदवई नगर,
नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : +24604157, 24347700 – 24347799
फैक्स : +91-11-24682202
ई-मेल : cmd@ireda.in वेबसाइट : www.ireda.in
@IREDALimited @IREDALtd @iredaofficial